1. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- वैज्ञानिकों तथा अभियन्ताओं के लिए आयोजित डॉयलाग का उद्‌घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, ई.डी., एन.एच.पी.सी. भ्राता विनोद गुलाटी जी, रशिया के इस्टर्न स्टेट टेक्नालॉजी युनिवर्सिटी के तकनीकी विज्ञान के विभागाध्यक्ष भ्राता वलादीमीर वी. मैक्रो, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु. मोहिनी बहन, दादी रत्नमोहिनी तथा अन्य। **2. आबू रोड (शान्तिवन)**- शिक्षक-सम्मेलन का उद्‌घाटन करती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. चन्द्रवदन चोकसी भाई, ब्र.कु. सुन्दरलाल भाई, दादी रत्नमोहिनी जी तथा अन्य। **3. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)**- 'आध्यात्मिक एकता द्वारा ग्राम्य भारत का सशक्तिकरण' - परिचर्चा तथा राजयोग रिट्रीट का उद्‌घाटन करते हुए श्री नर्मदा शुगर के अध्यक्ष भ्राता घनश्याम पटेल, भारत किसान संघ के अध्यक्ष कुँवर जी भाई जादव, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. शशि बहन, ब्र.कु. सरला बहन तथा अन्य। **4. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)**- अखिल भारतीय मीडिया सेमीनार का उद्‌घाटन करते हुए वरिष्ठ पत्रकार डॉ. भ्राता एन.के. त्रिखा, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, पूर्व सांसद डॉ. भ्राता एस.एस. महापात्र, राजयोगिनी दादी मनोहर दन्द्रा जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी तथा अन्य। **5. बावल (ओ.आर.सी.)**- हरियाणा के मुख्यमन्त्री भ्राता ओमप्रकाश चौटाला को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. गीता बहन। **6. जगदलपुर**- नव-विश्व आध्यात्मिक दर्शनालय का उद्‌घाटन करते हुए मध्य प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता के.एम. सेठ जी, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु. हेमलता बहन, ब्र.कु. मंजूषा बहन तथा ब्र.कु. सविता बहन। **7. आबू रोड (शान्तिवन)**- अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्‌घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कुं. मृत्युन्जय भाई तथा अन्य। **8. देहली (मजलिस पार्क)**- शिव सन्देश वाहन का उद्‌घाटन करते हुए दिल्ली के श्रम तथा उद्योग मन्त्री भ्राता मंगतराम सिंघल। साथ में हैं ब्र.कु. राजकुमारी बहन, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई तथा अन्य।

धर्मग्लानि के समय सृष्टि पर अवतरित होकर, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देने वाले, नई सृष्टि के रचनाकार शिव बाबा तथा उनके साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा की मंगल प्रेरणा से प्रारम्भ की गई 'ज्ञानामृत' पत्रिका जन-जन के मन में ज्ञान-प्रकाश फैलाती हुई अपनी सफल यात्रा के 39 वर्ष पूरे कर चुकी है। कुछ सौ पाठक संख्या से प्रारम्भ यह पत्रिका आज देश-विदेश में 15 लाख से भी अधिक भाई-बहनों द्वारा पढ़ी जाती है।

साहित्य का अर्थ है - स + हित अर्थात् कल्याण के लिए। अपनी 39 वर्ष की पावनकारी यात्रा में इस पत्रिका ने समाजहित में चमत्कारी कार्य किया है। अनेक आत्माओं की बुझती ज्ञान-ज्योति को प्रकाशित किया है। जीवन में आशा का संचार किया है, दिग्भ्रमितों को मार्ग दिखाया है, निज की सत्य पहचान देकर प्रभु का साक्षात्कार कराया है, हिम्मत के पंख देकर उड़ाया है और सफलतामूर्त बनने का बहुमूल्य हार पहनाया है। इसका एक-एक बहुमूल्य रत्न पाठकों की बुद्धि रूपी झोली को भरपूर कर 21 जन्मों की प्रालब्ध का अधिकारी बना देता है। परमधाम से पधारे परमात्मा पिता के परम कल्याणकारी सन्देशों की वाहिका इस पत्रिका को दिनों-दिन अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने का, जन-जन तक इसे पहुँचाने का कार्य आप सभी ब्रह्मावत्स अथक होकर करते हैं। आगे भी आपका यह उमंग दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहेगा और पत्रिका से लाभ लेने वालों का दायरा भी विस्तृत होता रहेगा, ऐसी मेरी शुभकामना है। हताशा-निराशा और उदासी के इस युग में यह पत्रिका मानो प्रकाश-स्तम्भ है।

प्रभु की प्यारी इस पत्रिका के लिए जो भी भाई-बहनें श्रेष्ठ मनन-चिन्तन के लेख भेजते हैं, जो इसके रूप को सजाते-सँवारते हैं और जन-जन तक भेजते हैं तथा जो इसे पढ़ कर जीवन की श्रेष्ठ धारणाओं को मजबूत बनाते हैं उन सभी को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ। आशा करती हूँ कि इच वन टीच टेन के आधार पर हर पाठक अपनी पत्रिका से दस नई आत्माओं को अवश्य प्रभु के नजदीक

अमृत-सूची

लाएगा। जुलाई मास से पत्रिका का 40वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। इस नए वर्ष में सभी विवेकवान पाठकों से मेरा अनुरोध है कि प्यारे बाबा की 'स्व-परिवर्तन से सर्व-परिवर्तन' इस शिक्षा को साकार करें। पत्रिका को हर वर्ग, हर गाँव, हर गली तक पहुँचाते हुए प्यारे बाबा को प्रत्यक्ष करें और विश्व परिवर्तन के कार्य को तीव्र गति दें। सर्व की दुआओं से झोली भरें और सदा सन्तुष्टमणि बन चेहरे और चलन से बाप समान बनें। ज्ञानामृत दिनों-दिन फूले और फले।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

B. K. Prakash Mani

(ब्र.कु. प्रकाशमणि)

वर्णन किया है वे सब इन पर पूरे उतरते हैं। ऐसा सुन्दर, परम आकर्षक देव तन रचने के लिए ही वर्तमान समय परमपिता शिव परमात्मा और आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा की सम्पूर्ण आत्मा, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के साकार माध्यम से आध्यात्मिक सूत्र उद्घाटित कर रहे हैं।

संसार में प्रचलित सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने की इच्छुक तो बहुत बहनें होती होंगी परन्तु समय, शक्ति और धन का अभाव, माता-पिता की स्वीकृति न मिलना तथा लोक-लाज आदि कई बातें बाधाएँ बन सामने आती हैं परन्तु ईश्वर द्वारा उद्घोषित इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी बनना या उसके लिए प्रशिक्षण प्राप्त करना पूर्णतया नि:शुल्क है। किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट की बात भी नहीं है। माँ-बाप भी अच्छा भविष्य देखेंगे तो भला क्यों रोकेंगे और समाज के लोग प्रारम्भ में ही रोड़े डालते हैं बाद में तो पीठ-थपथपाई करने लगते हैं।

लौकिक सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में प्रतियोगी यदि शादीशुदा हो तो उसे इसके योग्य नहीं माना जाता। कुछ दिन पहले एक बहन को विजय का ताज मिल गया था परन्तु बाद में पता चल गया कि वह शादीशुदा है और इस पर समाचार-पत्रों में खूब बवाल मचा तो उसने ताज लौटा दिया। प्रश्न उठता है कि विवाहित और अविवाहित में ऐसा क्या अन्तर है? अन्य कुछ बातों के साथ-साथ जो मुख्य अन्तर है वह है ब्रह्मचर्य की पालना का। ब्रह्मचर्य मानव की बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसके रहते मानव के सौन्दर्य में चार चाँद लग जाते हैं। परन्तु आज के विवाहित जीवन में यह उपलब्धि नष्ट हो जाती है। देवी-देवताएँ तो वैवाहिक जीवन में भी इसे बना कर रखते थे तभी तो श्री लक्ष्मी और श्री नारायण को विवाहित जीवन में भी दो ताज से सुशोभित दिखाते हैं और उनकी पूजा की जाती है। राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चुनी जाने वाली सुन्दरी का यह ताज केवल अविवाहित जीवन में ही शोभित हो सकता है। कोई शादी किए बिना भी ब्रह्मचारी है या नहीं, आज के युग में इसकी कोई गारंटी नहीं है। और यदि तन से हो तो भी मन से है या नहीं इसकी भी कोई गारंटी नहीं है। फिर भी, आज के तमोप्रधान विश्व में भी यदि शारीरिक पवित्रता को ताज पहनाने का आधार बनाया गया है, तो यह पवित्रता के महत्त्व को दर्शाने वाला पहलू ही है। सौन्दर्य प्रतियोगिता में विजयी बहनें पवित्रता की शर्त का पालन करते हुए एक वर्ष तक ताज, नाम और पैसे को हासिल कर सकती हैं। लेकिन भगवान द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में विजयी बनने के लिए वर्तमान समय चल रहे संगमयुग में मन, वचन, कर्म से पूर्ण पवित्रता का पालन करने से 21 जन्म के लिए अविनाशी महिमा, अखुट धन, दिव्य सौन्दर्य और पूर्ण कंचन काया प्राप्त की जा सकती है।

लौकिक प्रतियोगिता में केवल बहनों को ही चुना जाता है क्योंकि युग में नारी देह के सौन्दर्य को अधिक प्रधानता दी गई है परन्तु परमात्मा चूँकि आत्माओं के पिता हैं और उनकी नजर में सभी आत्माएँ भाई-भाई हैं और स्त्री-पुरुष के चोले को आधार बना कर वे उनमें कोई भेद भी नहीं करते हैं इसलिए इसमें भाग लेने के लिए उन्होंने दोनों का ही आह्वान किया है। जैसे श्री लक्ष्मी जी सर्वांग सुन्दर और 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं वैसे ही श्री नारायण भी हैं। अत: ईश्वरीय प्रतियोगिता नारी और नर दोनों के लिए है।

लौकिक प्रतियोगिता में विजयी होने वाली बहनें न्यायाधीशों के सामने इच्छा प्रकट करती हैं कि वे उपहार में मिले पैसे से बाल-कल्याण या समाज-कल्याण आदि के कार्य करेंगी परन्तु व्यवहार में ऐसा बहुत कम या ना के बराबर ही हो पाता है। वे अधिकतर मॉडलिंग या अभिनय के क्षेत्र में चली जाती हैं परन्तु परमात्मा

पिता की प्रतियोगिता में वही विजयी होंगे जो समय, श्वास, संकल्प, धन आदि सब कुछ मानव मात्र की सेवा में अर्पण कर देंगे। बिना किसी भेदभाव के, अथक होकर आत्माओं की उन्नति में लगे रहेंगे और परमात्मा पिता की श्रीमत का कदम-कदम पालन करते हुए करनी-कथनी को एक बना कर रखेंगे। ऐसा करने के एवज में ही उन्हें 5000 वर्ष के सृष्टि-चक्र में मुख्य नायिका या मुख्य नायक की भूमिका मिलेगी। उसकी निर्विकार, हर्षित, कंचन काया को आधा कल्प प्रजा और आधा कल्प भक्त श्रद्धा सुमन अर्पित करते रहेंगे। **परमपिता परमात्मा शिव वर्तमान समय सहज राजयोग और सहज ज्ञान की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं जिसके अभ्यास से आत्मा के सर्व पतित संस्कार नष्ट हो जाते हैं। संस्कारों के आधार पर ही शरीर और अन्य सभी प्रारब्ध निर्मित होती हैं। कर्मफल ही सर्वांगीण सुख या दु:ख देने के निमित्त बनते हैं। जिनके पूर्ण पावन संकल्प और संस्कार साकार होते रहते हैं उनका आकार आधार, विचार, संसार सभी कुछ चित्ताकर्षक और सुखदाई बन जाता है।**

अत: भारत तथा भारत से बाहर चयनित सभी वर्तमान सुन्दरी बहनो, पूर्व चयनित बहनो, भविष्य के लिए तैयार हो रही बहनो, इच्छुक होते हुए भी किसी कारण से भाग नहीं ले सकने वाली बहनो और विश्व की सभी अन्य बहनो तथा भाइयो, आप सभी से शुभ अपील है कि आप दोनों प्रकार के सौन्दर्य को धारण करने का लक्ष्य रखें। केवल एक जन्म के लिए प्राप्त नश्वर चमड़ी आधारित सौन्दर्य, जो बीमारी और वृद्धावस्था के क्रूर वार से शनै-शनै नष्ट होता जाता है, उस पर मेहनत करने के बजाए राजयोग के द्वारा जीवन का वास्तविक सौन्दर्य भरने का पुरुषार्थ करें। राजयोगी केवल एक वर्ष के लिए नहीं बल्कि 21 जन्म के लिए सच्चे हीरे-रत्न जड़ित ताज का अधिकार, ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में अवश्य प्राप्त करेगा। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रथम मुख्य प्रशासिका माँ जगदम्बा ने परमात्मा शिव की कल्याणकारी श्रीमत पर चल कर मात्र 29 वर्षों के निरन्तर ज्ञान-योग के अभ्यास, दिव्यगुणों की धारणा और मानव मात्र की ईश्वरीय सेवा द्वारा भविष्य 21 जन्मों के लिए दो ताजधारी पद को सुरक्षित कर लिया। वे आने वाली सतयुगी दुनिया में, श्री लक्ष्मी के रूप में राज सिंहासन पर सुशोभित होंगी। श्री लक्ष्मी जी की अलौकिक, दिव्य मोहिनीमूर्त के समकक्ष तो पूरे कल्प भर में अन्य कोई सुन्दरी ठहर ही नहीं सकती। अत: उन्हीं मातेश्वरी जगदम्बा का अनुकरण कर हम भी ऐसी परम सुन्दर और परम दिव्य काया पाने के मार्ग पर विजयी हो सकते हैं।

– ब्र.कु. आत्मप्रकाश

महासमुन्द- छत्तीसगढ़ के राज्यमंत्री भ्राता पूनम चन्द्राकर जी, आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए। साथ में देना बैंक के प्रबन्धक भ्राता बेहरा जी एवं पूर्व नगरपालिका अध्यक्षा बहन अनिता रावटे जी।

पवित्र धन और धन के विभिन्न स्वरूप

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

विश्व में सभी चीज़ों के दो स्वरूप होते हैं, एक अच्छाई का और दूसरा बुराई का। एक छुरी से हम सब्ज़ी भी काट सकते हैं अर्थात् उसका सतोप्रधान उपयोग करके सुख भी पा सकते हैं और उसी छुरी से किसी की हत्या भी की जा सकती है। ऐसे ही गैस से खाना भी पकता है और वही गैस सिलिण्डर फटता है तो आग लग जाती है अर्थात् वह किसी की जान भी ले सकता है। कम्प्यूटर और इण्टरनेट कनेक्शन के द्वारा सुन्दर-सुखद, सार-गर्भित समाचार, लेख आदि मिलते हैं जिससे मानव समाज का कल्याण होता है और इनका तमोप्रधान उपयोग करके अनेक आत्मायें विकारी जगत की जानकारी प्राप्त करके अपने जीवन को बरबाद भी करते हैं।

इसी प्रकार, विश्व परिवर्तन के समय प्रकृति के 5 तत्व अपना विनाशकारी स्वरूप दिखाते हैं किन्तु इन्हीं 5 तत्वों से सभी की शरीर रचना होती है, वृक्ष, फल, फूल उत्पन्न होते हैं। बादलों के रूप में समुद्र से सबको पानी मिलता है जिससे जीवन रक्षा होती है। विश्व परिवर्तन का दूसरा साधन है अन्तर्राष्ट्रीय अणु-युद्ध। आत्मा और परमात्मा भी चैतन्य-अणु ही हैं। प्रकृति के सभी तत्वों का मूल स्वरूप अणु-रूप ही है। सृष्टि रंगमंच पर जड़-चेतन अणु का ही खेल चलता है। अणु आत्मा ही परमधाम से इस सृष्टि रंगमंच पर अवतरित होकर अणु-परमाणुओं से निर्मित शरीर धारण कर अपना पार्ट बजाती है, जो समयानुसार सतो, रजो, तमो होता है। उसी अणु शक्ति के द्वारा बिजली का निर्माण होता है जिससे अनेक सुखदायी कार्य होते हैं, सुखदायी साधनों का निर्माण होता है और उसी अणु की विस्फोटक शक्ति के द्वारा विनाश भी होता है, अनेक दुखदायी घटनायें भी होती हैं।

विश्व परिवर्तन में तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है गृह-युद्ध। युद्ध विनाशकारी तो होता है परन्तु कभी-कभी कल्याणकारी भी होता है, आवश्यक भी होता है। उदाहरणार्थ फ्रान्स या रशिया में क्रान्ति हुई जिसके फलस्वरूप उस समय की प्रचलित तानाशाही राज्य-व्यवस्था का अन्त हुआ और नयी राज्य-व्यवस्था का उदय हुआ। इस प्रकार, भूतकाल में अनेक प्रकार की क्रान्तियाँ हुईं, युद्ध हुये और उसके बाद उस समाज की व्यवस्था में परिवर्तन हुआ। विश्व परिवर्तन की अन्तिम घड़ियों में गृह-युद्ध भी अनेक रूपों से अपना कार्य करेंगे। दुनिया में अनेक प्रकार की शक्तियों में जन-शक्ति बहुत बड़ी और महत्त्वपूर्ण शक्ति है और इस जन-शक्ति की उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

स्व-परिवर्तन के पुरुषार्थ में तन-मन-धन तीनों का विशेष योगदान है। परमात्मा पिता शिव ने भी दिव्य-कर्त्तव्य करने के लिए प्यारे ब्रह्मा बाबा के तन का आधार लिया। तन के बिना आत्मा कोई कर्त्तव्य नहीं कर सकती है। तन के भी सतो, रजो, तमो स्वरूप होते हैं। तन के सतोप्रधान स्वरूप में हम अच्छा पुरुषार्थ कर सकते हैं और किसी को सुख भी दे सकते हैं। तमोप्रधान उपयोग द्वारा दुख भी देते हैं। देवताओं को भी अपना पार्ट बजाने के लिए तन की आवश्यकता होती है तो आतंकवादी, उपद्रवी लोगों को भी अपना कार्य करने के लिए तन की आवश्यकता होती है।

मन भी आत्मा की एक शक्ति है। मन का भी सतोप्रधान तथा तमोप्रधान उपयोग होता है। मन के

लिए कहा गया है - 'मन: एव मनुष्याणाम् कारणम् मोक्ष बन्धनम्', 'मन चंगा तो कटौती में गंगा।' हम सभी भी मन्मनाभव और मध्याजी भव की श्रीमत के द्वारा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं और जो इस श्रीमत का जितना अच्छी रीति से पालन करता है वह उतना ही श्रेष्ठ पद पाता है।

मनुष्यात्मा की उन्नति-अवनति में तीसरी मुख्य चीज़ है धन। धन में प्रचण्ड शक्ति है, जो मनुष्यात्माओं के सुख-दुख में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसे आत्मा में चैतन्य शक्ति है, वैसे ही धन में भी अपनी एक विशेष शक्ति है, जो आत्मा के सुख-दुख का आधार है। धन का सतोप्रधान उपयोग आत्मा के सुख का आधार बनता है और उसी धन का तमोप्रधान उपयोग आत्मा के दुख का कारण बनता है। इस ब्राह्मण जीवन में भी धन का सदुपयोग करके हम श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सकते हैं। जैसे कि हम सबके आदर्शमूर्त प्राणप्रिय ब्रह्मा बाबा और अनेक भाई-बहनों ने किया। धन से श्रेष्ठ धारणा बनती है और धन का त्याग भी एक विशेष प्रकार की तपस्या है। इसीलिए ईशावास्योपनिषद में लिखा है - **धन के त्याग से आत्मा को अनन्त शक्ति और शान्ति की प्राप्ति होती है।**

राजा भर्तृहरि ने लिखा है - विद्या विवादाय, धनम् मदाय। यह आज की दुनिया में हो रहा है। विद्या का उपयोग विवादों में और धन का उपयोग मद-मत्सर के रूप में होता है। अभी-अभी वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन की एक रिपोर्ट में छपा था - अमेरिका जैसे धनाढ्य देशों में केसीनों आदि के द्वारा जुआ खेलने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। फुटबॉल, क्रिकेट जैसे सामान्य खेलों में भी करोड़ों-अरबों रुपयों का जुआ खेला जाता है। वर्तमान तमोप्रधान जगत में तो प्राय: हर छोटी-बड़ी बातों में कहाँ न कहाँ जुआ अपना स्थान बनाये हुए ही है। विदेशों में जैसे हर छोटी-छोटी चीजों का बीमा होता है, वैसे ही हर छोटी-छोटी बातों में जुआ भी खेला जाता है। मनुष्य जानते हैं कि तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों के सेवन से कैन्सर जैसे जीवन-घातक भयानक रोग होते हैं फिर भी दिनोंदिन तम्बाकू के उपयोग बढ़ते ही जाते हैं। अभी-अभी भारत के एक शहर में विद्यार्थी क्यों और कैसे नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं, उस विषय में सर्वे हुआ तो पता पड़ा कि शिक्षक ही नशीले पदार्थों के सेवन का प्रेरणास्रोत बनता है। एक अन्य शहर में शिक्षकों का सर्वेक्षण किया गया तो पता पड़ा कि उस शहर में 48.5 प्रतिशत शिक्षक नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। इसके साथ-साथ सिनेमा तथा विभिन्न समाचार पत्रों में नशीले पदार्थों के विज्ञापन होते हैं। यह है धन के तमोप्रधान उपयोग की लीला। उसी प्रकार मिलावट का कार्य भी बहुत होता है। साधारण मिसाल के रूप में देखें तो कई स्थानों पर आमरस जो मिलता है, उसमें 25 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक मिलावट होती है। शुद्ध शाकाहारी भोजन में भी अनेक प्रकार की मिलावट होती है। चीनी, टूथपेस्ट आदि कई चीजों में अशुद्ध तमोप्रधान चीज़ों का प्रयोग होता है अर्थात् लोभ मनुष्यों को ये सब कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

धन-सम्पत्ति अनेक झगड़ों और कानूनी समस्याओं का निमित्त कारण भी है। न्यायालायों में जितने मुकदमे चल रहे हैं उनमें 50 प्रतिशत से अधिक धन-सम्पत्ति के कारण ही हैं। आज शेयर बाजार देश और समग्र दुनिया में आर्थिक स्थिति का दर्पण है। उसमें भी अनेक घोटालों के कारण उतार-चढ़ाव होता है, अनेक व्यक्ति और कम्पनियां दिवालिया होती हैं। धन के लोभ में अमेरिका में प्रतिवर्ष 500 के लगभग कम्पनियां लोगों के साथ ठगी करके करोड़ों डालर लेकर गुम हो जाती हैं। भारत में भी पिछले

शेष पृष्ठ 14 पर

'पत्र' सम्पादक के नाम

भारत में कई आध्यात्मिक संस्थाएँ हैं। उनकी मासिक पत्रिकाएँ भी हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था की ओर से भी ज्ञानामृत पत्रिका निकलती है परन्तु मैंने जो ज्ञानामृत में अमृत प्राप्त किया, अन्य कहीं से नहीं प्राप्त हुआ। मैं पिछले 16 वर्षों से ज्ञानामृत का नित्य पठन करता आ रहा हूँ और मुझे ऐसे भी अनुभव प्राप्त हुए हैं कि प्यारे शिव बाबा हम बच्चों को ज्ञानामृत के द्वारा भी श्रीमत देते हैं। जब कोई आत्मा विघ्नों से घिरी हो तब बाबा इस पत्रिका के द्वारा भी उसकी मार्गप्रदर्शना करते हैं। ज्ञानामृत ज्ञान का सागर है, इसमें ज्ञान के अनमोल मोती, माणिक भरे हुए हैं। कोई नित्य इन ज्ञान-मोतियों को चुगता रहे तो वह सचमुच होलीहंस बन जायेगा। यह पत्रिका जीवन के हर दौर में हमारा सच्चा साथी बन समाधान का अनुभव कराती है। मैं कह सकता हूँ कि कलियुग के अंधकार में यह लाइट हाउस (प्रकाश स्तंभ) का कार्य करती है। मैं नहीं समझता कि मैंने पिछले 16 वर्षों में एक भी ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ना छोड़ा होगा। इसे सच्ची गीता व भागवत मानता हूँ क्योंकि इसमें शिव बाबा का सच्चा गीता ज्ञान भी है तो गोप-गोपियों के अथवा ब्राह्मण परिवार के अनेक अनुभवियों के अनुभव चरित्र भी हैं। ज्ञानामृत के सभी भाई-बहनों को हार्दिक बधाई।

–ब्र.कु. अविनाश गिडवानी,
अचलपुर कैम्प (महा.)

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

ज्ञानामृत समयानुसार आत्माओं को विकार मुक्त कर पवित्र संकल्प देने वाली पत्रिका है। इसे पढ़ने से आत्मा को शक्ति और शान्ति प्राप्त होती है। 'मृत्यु पर दुःख क्यों?', 'सुखद आभास (फील गुड)' आदि रचनाएँ ज्ञानवर्धक लगीं। आने वाले समय में बाबा को प्रत्यक्ष करने में यह पत्रिका सशक्त माध्यम बने। 'ज्ञानामृत' की 40वीं सालगिरह पर हार्दिक बधाइयाँ।

– ज्योति अशोक होवडे,
हडपसर (पुणे)

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

अप्रैल 04 में प्रकाशित लेख 'योगाभ्यास के लिए विधि-विधान', 'ब्रह्मचर्य की असम्भव धारण सम्भव बन गई', 'न हो निराश जब तक है श्वास' और 'त्याग की शक्ति' ये लेख पढ़कर आत्माएँ बहुत प्रभावित हुई हैं। ऐसे लेखों से लाखों आत्माओं को अविनाशी खुशी मिलती है। ज्ञानामृत का मालिक बापदादा अपने बच्चों को ज्ञानामृत पिला कर अमर बनाते जाते हैं। मैं ज्ञान-मुरली तो सुनता हूँ पर हर महीने पत्रिका का इंतजार रहता है कि इस बार यह ज्ञान की क्या-क्या बातें लायेगी। इसे पाकर अविनाशी खुशी, अपार खुशी मिलती है।

– ब्र.कु. महेश, अरुणाचल प्रदेश

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

'ज्ञानामृत' मासिक के अप्रैल अंक में प्रश्न का उत्तर लिख कर आपने सभी को हर्षित कर दिया। यह कमाल है आपकी कलम का? उसमें भी श्री शिवाजी महाराज और रामदास स्वामी का, नजदीक के इतिहास का उदाहरण देकर सोने पे सुहागा कर दिया। मेरी आत्मा कहती है कि नई पीढ़ी को हजार साल के अंदर के नामीग्रामी संत-महात्माओं, समाज सुधारकों आदि का उदाहरण देने से उन्हें ज्यादा उमंग आता है क्योंकि उनको सब जानते हैं। पाठ्य पुस्तकों में भी उनका चरित्र-चित्रण होता है। ज्ञानामृत मासिक से अनेक आत्माओं का जीवन शान्तिमय हो गया है।

– ब्र.कु. शंकर भाई हांडे,
नवी मुम्बई

सफलता का सूत्र है – सन्तुलन

– ब्रह्माकुमार सतीश, आबू पर्वत

व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य बाल्यकाल से छोटे-बड़े आयामों में बनता व बदलता रहता है। सभी के जीवन का लक्ष्य सुख-शान्ति एवं सफलता की प्राप्ति है। इस प्रतिस्पर्धा एवं भौतिकता प्रधान युग में व्यक्ति का कद भले ही छोटा हो लेकिन उसकी आशायें-आकांक्षायें आसमान छूती नज़र आती हैं जिनकी प्राप्ति के लिए कुछ लोग स्वभाव-संस्कारवश और कुछ वातावरण एवं परिवेश वश जीवनचर्या का निर्धारण करते हैं। सुशील, सुसभ्य एवं शिक्षित व्यक्ति इस प्रतीक्षित सफलता के लिए त्याग-संयम-सन्तुलन का मार्ग अपनाते हैं तो दूसरे कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें सफलता तो हर हाल में चाहिए। चाहे उन्हें उसके लिए सुमार्ग-कुमार्ग एवं लघु-दीर्घ योजनाओं के प्रयास से ही क्यों न गुज़रना पड़े। ऐसे महत्त्वाकांक्षी श्रम, धीरज एवं सन्तुलन को ताक पर रख येन-केन-प्रकारेण इच्छित लक्ष्य पर पहुँचने हेतु शॉर्ट कट रास्ता ढूँढ़ते हैं। आज ऐसे व्यक्तियों की बहुतायत है। बढ़ती गलाकाट प्रतिस्पर्धा में रातोंरात धनाढ्य बनने की दौड़ में व्यक्ति अशान्त, परेशान, हताश, निराश व उदास दीखता है परन्तु मन इच्छित सफलता सबको मिले, असफलता कभी हो ही नहीं, हर बार जीत ही हो, हार हो ही नहीं - ऐसा जरूरी नहीं है।

सफलता की चाह एवं राह

सफलता सबको प्रिय है। व्यक्ति कार्य करता ही है सफलता को सामने रख कर। किन्तु सफलता के महत्त्वपूर्ण सूत्रों को जाने बिना सफलता दिवास्वप्न रह जाती है। साधक साधना में, खिलाड़ी खेलों में, व्यवसायी व्यवसाय में, विद्यार्थी परीक्षा में, उद्यमी धन कमाने में, नेतागण नेतृत्व में एवं सामान्य व्यक्ति सुख-शान्ति-सम्पन्न जीवन जीने में सफलता चाहते हैं। एकता, एकाग्रता, परिश्रम, दृढ़ता एवं मनोबल के साथ आवश्यक है भाग्यबल। किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण सफलता का सूत्र है - सन्तुलन। एक संत ने व्यवहारिक मर्यादा की धारणा बताई है - खाओ-पीयो - चखो मत, लियो-दियो - रखो मत, हालो-चालो - थको मत, बोलो-चालो - बको मत। इन छोटे-छोटे वाक्यांशों में बड़े मतलब की बात कह दी गई है।

असन्तुलन के दुष्परिणाम

सन्तुलन के अभाव में व्यक्ति हताश व निराश है। बिना सन्तुलन के उसकी शक्तियों का अपव्यय होता है। परिणामत: वह अशक्त बन कर थक-हार कर बैठ जाता है। ऐसे समय पर उसे हताशा-निराशा के गहरे अंधकार आ घेरते हैं। दूर-दूर तक उसे आशा की कोई किरण नजर नहीं आती है। अवसाद से घिरा व्यक्ति विक्षिप्त हो जाता है। यहाँ तक कि ऐसा मनोरोगी आत्मघाती प्रवृत्तियों में प्रवृत्त हो जाता है। पारिवारिक एवं सामाजिक कलह तथा हिंसा भी इसी कारण बढ़ती जा रही हैं।

जीवन-जगत में सारी व्यवस्थाएँ सन्तुलन से ही चलती हैं। प्रकृति में सन्तुलन बिगड़ने से प्राकृतिक प्रकोप पैदा हो जाता है। शरीर में, स्वास्थ्य में तनिक भी असन्तुलन व्यक्ति को रोगी बना देता है। समाज में असन्तुलन व्यवस्था को बिगाड़ देता है। मानसिक असन्तुलन व्यक्ति को मनोरोगी एवं जीवन को नारकीय बना देता है।

सुखी एवं शान्त जीवन का मन्त्र है - दिनचर्या में सन्तुलन। हमारे

मूर्धन्य कवियों ने सार संक्षेप में गहन बातें कह दी हैं - **'अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप, अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।'** जीवन, वीणा के उन तारों की तरह है जिन्हें शिथिल (ढीला) करने से स्वर बेसुरा हो जाता है और अधिक तानने से तार टूट सकता है। इसलिए हमारे आर्य ग्रन्थों में आता है - अति सर्वत्र वर्जयेत्।

सन्तुलन के चमत्कार

आपने देखा होगा कि जब नट सन्तुलन बनाता है तो रस्से पर एक छोर से दूसरे छोर पर नृत्य करते हुए निकल जाता है। बिना हैण्डिल पकड़े साइकिल चलाना, एक ही मोटर साइकिल पर अनेक सवारों का करतब दिखाना, वाहन चलाना, पानी में तैरना, हवा में उड़ना, आग से गुजरना, खेलों में सफलता पाना आदि सभी सन्तुलन से ही सम्भव हैं। हाँ, इस सन्तुलन में मानसिक दृढ़ता व एकाग्रता की विशेष भूमिका होती है। जीवन में भी सन्तुलन बहुत जरूरी है। चाहे वह स्थूल हो या सूक्ष्म, शारीरिक हो या मानसिक, सामाजिक हो अथवा आध्यात्मिक। शारीरिक एवं स्थूल व्यवस्था में सन्तुलन हम अभ्यास से अर्जित कर लेते हैं परन्तु मानसिक सन्तुलन में अभ्यास के साथ ध्यान, सूझबूझ, विवेक, परस्पर तालमेल, मनोबल, आत्म-पुरुषार्थ, ईश्वरीय आस्था, विश्वास व सहयोग की भी बहुत आवश्यकता होती है।

सम्पूर्ण सन्तुलन से ही सर्वांगीण स्वास्थ्य

यद्यपि जीवन-जगत का निर्माण सन्तुलन पर आधारित है, हर दृष्टि से इसकी आवश्यकता एवं महत्ता महसूस की जा सकती है। फिर भी इन्हें सरलता से समझने के लिए कुछ भागों में विभक्त कर सकते हैं। जैसे - शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक सन्तुलन।

शारीरिक सन्तुलन – असन्तुलित भोजन के कारण आदमी रोगी बन सकता है, पोषक तत्वों का समावेश आवश्यक है। कोरा अन्न ही खाया, कार्बोहाइड्रेट खाया, श्वेतासार खाया, इनसे पेट तो भर जायेगा किन्तु शारीरिक सन्तुलन बिगड़ जायेगा। प्रोटीन भी चाहिए, वसा भी चाहिए तो लवण भी चाहिए। ऐसे ही वात, पित्त व कफ के त्रिदोष से होने वाला असन्तुलन शरीर को व्याधिग्रस्त कर देता है। किसी को बहुत गुस्सा आना, चिड़चिड़े स्वभाव का होना, बार-बार लड़ाई-झगड़ा करना, दिन भर परिवार को सताना आदि स्थितियाँ कोई-न-कोई आहार दोष से भी जुड़ी होती हैं।

मानसिक सन्तुलन - मानसिक असन्तुलन से व्यक्ति आवेश, आवेग, उत्तेजना आदि से संक्रमित हो विक्षिप्त हो जाता है। ऐसा मैं नहीं करना चाहता था या ऐसा मैंने क्यों कर दिया जैसी घटनाओं के पीछे यही कारण है। मानसिक असन्तुलन से निराशा, हताशा, तनाव, चिन्ता, ग्लानि, उत्तेजना, उदासी, दुराग्रह, दुविधा, अधैर्य व नीरसता जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

सामाजिक सन्तुलन - जनसंख्या वृद्धि, बालक-बालिका के अनुपात में असन्तुलन, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आर्थिक एवं चारित्रिक संकट, धार्मिक एवं साम्प्रदायिक दंगे तथा गृह युद्ध – ये सामाजिक असन्तुलन के परिचायक हैं। **प्राकृतिक असन्तुलन** से प्राकृतिक प्रकोप उत्पन्न होते हैं। दिनोंदिन गहराता वैश्विक जलसंकट, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, कटते जंगल, बढ़ते मरुस्थल, भूकम्प, ओज़ोन में छिद्र, पर्यावरण प्रदूषण व ग्रीन हाउस इफेक्ट जैसी समस्याएँ विकराल रूप धारण कर रही हैं।

सन्तुलन के लिए स्वस्थ एवं सन्तुलित जीवन पद्धति – राजयोग

असन्तुलन के अनेक कारण हो सकते हैं किन्तु राजयोग हमें सम्यक निराकरण प्रदान करता है। राजयोग

स्वस्थ जीवन पद्धति का निर्माण करता है। आहार नियमन, विचार शुद्धि, व्यवहार कुशलता एवं उत्तम आचरण का मापदण्ड है राजयोग। राजयोग से एक ओर जहाँ मानसिक तनाव, उलझन, अशान्ति एवं कायिक व मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है, वहीं दूसरी ओर मानसिक शान्ति, आत्मिक-सन्तुष्टि, एकाग्रता, दृढ़ता, निर्णय एवं परखने की शक्ति में वृद्धि होती है। यह योग अन्य सभी योगों से सर्वथा भिन्न है। यह कुछ क्षणों व दिनों का नहीं है बल्कि जीवन को सुखी-शान्त बनाने तथा आत्मानुभूति व परमात्मानुभूति करने का नुस्खा है, सुगम मार्ग है तथा दूसरों के भी जीवन को श्रेष्ठ, दिव्य एवं आदर्शमय बनाने का प्रकाश-स्तम्भ है।

सन्तुलन की निर्मिति - एकरस स्थिति

आज जब चारों ओर से व्यक्ति का जीवन तनावग्रस्त, असंयमित और असन्तुलित है तभी एकाग्रता व दुआओं की आवश्यकता है। ईश्वरीय महावाक्यों में बैलेन्स से ब्लैसिंग (आशीर्वाद) प्राप्त करने का दिशा-निर्देश हमें मिलता है। **कर्म और योग का सन्तुलन, साधना एवं साधनों में सन्तुलन, लौकिक एवं अलौकिक में सन्तुलन, कथनी-करनी में, भावना-विवेक में, प्रेम-नियम में, स्वास्थ्य एवं सेवा में सन्तुलन निश्चित ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आत्मिक दृष्टि, सतत् जागरुकता तथा प्रभु-स्मरण के बिना जब हम कर्मक्षेत्र या सेवाक्षेत्र पर उतरते हैं तो उपर्युक्त सन्तुलन भूल जाता है। हम एक ही दिशा में बेतहाशा भागने लगते हैं।** गीता ज्ञान दाता हमें यही संदेश देते हैं - 'सुखे-दु:खे समे कृत्वा लाभालाभो जयाजयौ.....।' निश्चित ही सुख-दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय, निन्दा-स्तुति जैसी परिस्थितियों में सन्तुलन हमें एकरस स्थिति प्रदान करता है। हमारा आहार-विहार, रहन-सहन, पहरवाइश सब सादा-सामान्य हो, मध्यम वर्ग का हो। ऐसा सादा जीवन तथा उच्च विचार ही सुख-शान्ति के आधार हैं। ✦✦

स्वमान जागृति

– ब्र.कु. नरेन्द्र, कायावरोहण (गुजरात)

जो व्यक्ति स्वमान में स्थित होता है उसके चारों ओर एक ऐसा अदृश्य तेजपुञ्ज निर्मित हो जाता है कि निकट आने वाली हर आत्मा को भी स्वमान की स्मृति आ जाती है, उसका खोया मनोबल लौटने लगता है और मन के व्यर्थ भाव समाप्त होकर वह समर्थ बन जाता है।

एक दिन आरब बादशाह नशखान से मिलने के लिए एक दूसरा आरब आ पहुँचा। प्रवेश द्वार पर ही उसे रोक दिया गया। थोड़े इन्तजार के बाद उसने बादशाह के नाम पर एक चिट्ठी लिखी कि मैं एक दीन-हीन आरब हूँ और आपसे मिलना चाहता हूँ। दरबान ने जाकर चिट्ठी बादशाह को दे दी, उसे अन्दर बुलवा लिया गया। जब आरब आया सामने तो नशखान ने पहला ही सवाल किया - ''तुम कौन हो ?'' आरब ने नशे से उत्तर दिया - ''जहाँपनाह, मैं एक महान आरब हूँ।'' बादशाह चौंक कर बोले - ''अरे भाई! तुमने चिट्ठी में तो लिख भेजा था कि तुम एक दीन-हीन आरब हो। और यहाँ आते ही तुम्हारी भाषा ही बदल गई ?'' आरब ने स्वमानयुक्त नशे से प्रत्युत्तर दिया - ''जब मैं नशखान से दूर था तब एक मामूली-सा आरब था लेकिन अब मैं स्वयं बादशाह के साथ हूँ तो महान आरब बन गया हूँ।''

प्यारा शिव बाबा भी संगमयुग पर अपना संग देकर, हमें अपनी महानता की याद दिलाता है। बाबा कहते हैं - बच्चे! आप ऊँचे-से-ऊँचे, सर्वशक्तिवान, त्रिकालदर्शी भगवान के लाडले बच्चे हो, आप भी मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर त्रिकालदर्शी तथा सर्वगुणों में मास्टर हो। सचमुच! पारस बनाने वाले बाबा का मन-बुद्धि से संग करने से हमारी सब सोई हुई महानताएँ जागृत हो रही हैं। हम अपने खोए हुए स्वराज्याधिकार को प्राप्त करते जा रहे हैं। ✪

राष्ट्रपिता और विश्वपिता दोनों का प्यार मिला मुझे

– ब्रह्माकुमार नरेन्द्र शेंडे, वर्धा

मेरा जन्म सन् 1933 में वर्धा से तीन किलो मीटर दूर गाँव चित्तौड़ा में हुआ। माता-पिता दोनों अशिक्षित थे और खेती का कार्य करते थे। घर का वातावरण बहुत धार्मिक था। माँ सभी देवी-देवताओं को मानती थी और प्रातः नहाकर, पूजा करने से पहले खाना नहीं खाती थी। घर में बहुत ही शान्ति का वातावरण था। विद्यालय वर्धा में था और बच्चे लगभग 8 साल की आयु में ही शिक्षालय में प्रवेश पाते थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का निवास उन दिनों वर्धा के पास सेवाग्राम में था। वे देश की आजादी के लिए विभिन्न स्थानों पर जाते रहते थे और लौटकर सेवाग्राम में ही निवास करते थे। उन्होंने प्रण किया था कि जब तक भारत देश आजाद नहीं हो जाता मैं साबरमती आश्रम में पाँव नहीं रखूँगा।

मेरे गाँव से सेवाग्राम लगभग डेढ़ कि.मी. की दूरी पर था, विद्यालय में प्रवेश पाने से पहले मैं अपने हमउम्र बच्चों की टोली (10-12 बच्चे) के साथ हर रविवार और शनिवार को वहाँ पहुँच जाता था क्योंकि इन दो दिनों में सेवाग्राम में विशेष कार्यक्रम होते थे। हम गाँव के बच्चों के शरीर और कपड़े दोनों ही बहुत गन्दे होते थे। आश्रम में पहुँच कर हम बापू की घास की बनी कुटिया के सामने खड़े हो जाते थे। कभी वे सूत कात रहे होते थे, कभी किसी विदेशी मेहमान से मिल रहे होते थे और कभी काँग्रेस के नेता उनके साथ बैठे हुए होते थे। हम बच्चों का हल्ला सुनकर वे कुटिया से बाहर निकल आते थे, उनकी आँखों में वात्सल्य भरा होता था परन्तु शरीर और कपड़ों पर लगी गन्दगी भी उनसे छिपी नहीं रह पाती थी।

बच्चों की टोली का नेतृत्व करते हुए वे पानी के हौज की तरफ चल पड़ते थे जहाँ पास में ही साबुन पड़ा रहता था। वे अपने स्नेह से सने हाथों से हमारे मैले कपड़ों को उतारते, शरीर पर साबुन मलते और हौज में डुबकी मरवा देते। देश की स्वतन्त्रता के विशालतम कार्य को सफलता का सेहरा पहनाने वाले उनके हाथ, हमारे मैले कपड़ों को कितने वात्सल्य से धोते थे और धोने का प्रशिक्षण देते थे, याद करते ही तन-मन सिहर उठता है। हमारा बाल मन खुशी और आनन्द में झूम उठता था। हम बच्चे इस आनन्द भरे वातावरण में इतने मशगूल हो जाते थे कि समय का अहसास भी भूल जाते थे। तभी नाश्ते का मीठा आह्वान लिए बा हमारी तरफ आती थी और हम जल्दी-जल्दी स्नान पूराकर रामधुन-सभा में शामिल हो जाते थे।

बापू जी का लक्ष्य था आत्मनिर्भरता इसलिए नाश्ते में अधिकतर आश्रम में उत्पादित चीजें ही होती थीं। कभी-कभी नीरा (एक प्रकार का रस) भी पीने को मिलता था जो बहुत स्वादिष्ट होता था। हम बच्चे वहाँ निर्भय होकर विचरण करते थे। मेरा यह तन कितना भाग्यशाली है जो राष्ट्र को राजनैतिक दासता से मुक्त करने वाले बापू ने दो बार इसे मल-मल कर नहलाया। इसके बाद

तो मैं स्वयं नहाना सीख गया था। बापू जी के वात्सल्य की कोई सीमा नहीं थी। वे हमारी नाक साफ करने में भी नहीं झिझकते थे। खादी के छोटे-छोटे रूमाल इस कार्य के लिए उन्होंने हमें प्रदान किए थे।

बापू के आश्रम में सफाई की उत्तम व्यवस्था थी। कभी कोई तिनका भी इधर-उधर देखते तो बापू जी स्वयं उसे उठाकर टोकरी में डाल देते थे। आश्रम में गाँधीजी की अनुपस्थिति में हम बा से जाकर लिपट जाते थे, वे भी कभी नाराज नहीं होती थी। वे बहुत मीठा बोलती थीं, बहुत प्यार देती थीं और हमें साक्षात् माँ का रूप लगती थी। कुछ वर्ष हम बच्चों को बा और बापू का यह दुलार भरा सान्निध्य मिलता रहा, फिर विद्यालय की पढ़ाई में व्यस्तता बढ़ जाने पर सेवाग्राम आना-जाना छूट गया।

मैंने नागपुर में अपने बड़े भाई के पास रहकर स्नातक की डिग्री प्राप्त की। वहाँ हमारे निवास के पास ही रामकृष्ण मिशन का आश्रम था। मैं हर रविवार वहाँ प्रवचन सुनने जाने लगा। एक प्रवचन में मुझे जानने को मिला कि परमात्मा बिन्दु रूप है। मराठी में सन्त ज्ञानेश्वर का लिखा एक ग्रन्थ है जिसका नाम है 'ज्ञानेश्वरी' जिसमें परमात्मा के बारे में लिखा है कि 'योगी जाणिते वरम अंगुष्ठ प्रमाणम' अर्थात् परमात्मा का स्वरूप अंगुष्ठ आकार वाला ज्योति स्वरूप है। इन बातों से परमात्मा के निराकार स्वरूप के बारे में मेरा विश्वास पक्का हो गया था। त्र्यम्बकराव नाम के एक वृद्ध और धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति मेरे बड़े भाई के मित्र थे। उन्होंने पैदल भारत भ्रमण किया था और छोटी आयु में ही पाँच मास हिमालय में भी साधना की थी। इनकी, सेना के मेजर के साथ दोस्ती थी। भारत-चीन युद्ध के बाद मेजर साहब जम्मू-कश्मीर से देहली की ओर जा रहे थे तो रास्ते में उन्होंने कश्मीर में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नाम से एक बोर्ड देखा। पहले उन्होंने अर्दली को इस संस्थान में भेजा और फिर स्वयं भी जाकर बहुत सारा आध्यात्मिक साहित्य खरीद लिया जिसमें निराकार परमात्मा शिव का एक चित्र भी था और नीचे के स्थान पर तत्कालीन ब्रह्माकुमारी आश्रमों के पते लिखे थे। वह सारा साहित्य उन्होंने नागपुर में आकर त्र्यम्बकराव जी को दिखाया। मैं भी वहाँ पहुँच गया। वे मुझे बच्चे जैसा समझते थे। मैंने देखा कि उनके हाथ में निराकार परमात्मा का चित्र था, वे उस पर ज्ञान-चर्चा कर रहे थे। मुझे भी परमात्मा के विषय में प्रवचनों में सुनी हुई तथा 'ज्ञानेश्वरी' में पढ़ी हुई बातें याद हो आई और अत्यधिक आकर्षण में बँधकर मैंने वह चित्र उन दोनों के हाथों से छीन लिया। मैंने कह दिया कि अब मैं इसे वापस नहीं दूँगा। इसके बाद उनका वार्तालाप चलता रहा कि क्या सचमुच भगवान अवतरित हो चुके हैं, क्या इस साहित्य में लिखी सभी बातें सच्ची हैं परन्तु नागपुर के आस-पास कोई ब्रह्माकुमारी केन्द्र न होने के कारण इन प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर न मिल सका।

मेजर साहब का बैंगलोर में स्थानान्तरण, इस घटना के कुछ समय बाद ही हो गया। वहाँ उन्होंने दादी हृदयपुष्पा द्वारा संचालित ब्रह्माकुमारी केन्द्र का पता लगा लिया और त्र्यम्बकराव को अपने पास बैंगलोर में बुलाकर, दादी जी से साप्ताहिक कोर्स करवाया। एक मास तक नियमित ज्ञान-कक्षा में भी जाते रहे और वापस नागपुर लौटे तो इस निश्चय के साथ कि परमपिता परमात्मा धरती पर अवतरित हो चुके हैं। सृष्टि पर शीघ्र ही रामराज्य की स्थापना होने वाली है। फिर उन्होंने हमारे सारे परिवार को ईश्वरीय ज्ञान सुनाया। और मुझे भी ईश्वरीय कार्य पर दृढ़ निश्चय हो गया।

हमारे पास जो ईश्वरीय साहित्य था उसमें पाण्डव भवन आबू पर्वत का पता छपा था, मैंने उसी पर पत्र-व्यवहार किया बाबा के नाम से। मैं लिखता था कि प्यारे बाबा, मुझे

आपसे मिलना है। मैं तड़फता हूँ आपको मिलने के लिए, आपको गले लगाने के लिए तरसता हूँ। बाबा का तुरन्त उत्तर आता था कि बच्चे कभी भी आ जाओ। मैं ऐसे पत्रों को पढ़कर बहुत-बहुत रोमांचित हो उठता था, एक-एक शब्द में अवर्णनीय रूहानी नशा समाया होता था। प्यारे बाबा के सैंकड़ों पत्र मेरे पास एकत्रित हो गए थे।

उन दिनों मुम्बई में दादी प्रकाशमणि जी ईश्वरीय सेवा पर उपस्थित थीं। उनसे भी सम्पर्क किया और फिर वर्धा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया। जब कुछ लोगों ने इसका विरोध किया तो मैंने तुरन्त बाबा को पत्र लिखकर सारा समाचार दिया। बाबा का उत्तर मिला - ''बच्चे, वो कुछ भी कहें पर आपको क्रोध नहीं करना है, शान्त रहना है।'' वर्धा में विधिवत सेवाकेन्द्र प्रारम्भ होने पर मैं पहली बार 19 जनवरी, 1969 को मधुबन वरदान भूमि पर पहुँचा। बाबा के अव्यक्त होने का समाचार तो वर्धा में ही मिल गया था। मैंने बाबा की पार्थिव काया को देखा, इतनी तेजस्वी मानो कि वे सोए हैं और अभी ही उठकर बोलेंगे। मेरे विचार चले कि जब अन्तिम जन्म की काया इतनी तेजस्वी है तो सतयुग के प्रथम जन्म में श्रीकृष्ण की काया कितनी न मन को मोहित करने वाली होगी! इस प्रकार, साकार में मिलने की तड़फ दिल के कोने में ही दबी रह गई और मैं बाबा के अन्तिम संस्कार में शामिल हुआ, कहीं से भी घुसकर बाबा को कंधा दिया। हम सभी ब्रह्मावत्सों के मन में सवाल था कि प्यारा बाबा इस तरह हमें छोड़कर क्यों गया? दादी हृदयमोहिनी के तन से अव्यक्त बापदादा ने जो पहले महावाक्य उच्चारे उनसे हमें सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गए। सभी भाई-बहनें गम्भीर स्थिति में हिस्ट्री हॉल में बैठे थे। बाबा ने कहा - ''बच्चे! कोई भी ऐसा न समझे कि ना मालूम बिना हम बच्चों की छुट्टी के साकार बाबा को वतन में क्यों बुलाया लेकिन छुट्टी दिलाते तो आप देते ......।''

प्यारे अव्यक्त बापदादा के इन मधुर महावाक्यों से सारे वातावरण में खुशी की लहर छा गई। इसके डेढ़ वर्ष बाद मुझे एक दिन दिव्य अनुभव हुआ जिसमें मैंने देखा कि साकार रूप में ब्रह्मा बाबा आए और मुझे गले लगा गए। **तब से मेरी यह अनुभूति और अधिक गहन हो गई कि बाबा हमारे साथ है और साथ रहेगा। साथ का यह वायदा कभी भी टूट नहीं सकता। पूरे कल्प हमें भिन्न नाम-रूपों में प्यारे ब्रह्मा बाबा का साथ मिलता ही रहेगा।**

पवित्र धन और धन के विभिन्न स्वरूप.....**पृष्ठ07 का शेष**

5 वर्षों में 2000 से भी अधिक फर्जी कम्पनियाँ बनी और भोलेभाले लोगों के करोडों रुपयों की ठगी करके गुम हो गयीं। भारत के एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ने, जोकि अभी अमेरिका में रहते हैं, कहा है - अगले 10 साल में धन के सम्बन्ध में जितने भी शब्द अर्थात परिभाषायें हैं, उन सबमें परिवर्तन हो जायेगा और अन्त में सतयुगी दुनिया (Global Golden Age) की स्थापना में धन का महत्त्वपूर्ण योगदान होगा। मनो-चिकित्सक भी यही कहते हैं कि आने वाले 25 वर्षों का समय विश्व में सबसे महत्त्वपूर्ण होगा और जो इस समय का सदुपयोग करेगा, वही श्रेष्ठ पद प्राप्त करेगा। **ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने भी हम सबको श्रीमत दी है कि बच्चे, अपने तन-मन-धन को सफल करो और सफलतामूर्त बनो।** मैंने पिछले 4-5 सालों से पवित्र धन के विषय में ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर अपने अनुभव की बातें सबके सामने रखीं और इस विषय की शृंखला के अन्तिम लेख में आप सब पाठकगण से नम्र निवेदन करता हूँ कि आप भी समय रहते अपने पवित्र धन को सफल करके श्रेष्ठ पद का अधिकार परमपिता परमात्मा से ले लो।

कामनाएँ हैं कालकूट

– ब्रह्माकुमार बिरादर, हैदराबाद

संसार में सबसे शक्तिशाली कौन? परमात्मा तो पारलौकिक सत्ता है परन्तु इस दृश्यमान जगत में कौन? इसके उत्तर कई हो सकते हैं लेकिन अनुभव के आधार से तो कामनाएँ और इच्छाएँ ही शक्तिशाली नज़र आ रही हैं। ये **कामनाएँ सूक्ष्म जाल बना कर, बड़े-से-बड़े योद्धा, विश्व विजयी सम्राट और सर्वथा स्वतन्त्र को भी परतन्त्र बना देती हैं। पहले जाल बुनती हैं, फिर उसे कसती हैं और अन्त में यह कसावट इतनी बढ़ जाती है कि व्यक्ति का गला ही घुटने लगता है। खाने-पीने, घूमने, शरीर को सुख देने की कामनाएँ तो हैं ही, साथ-साथ मैं आकर्षक दीखूँ, लोग मेरे शरीर और चेहरे को देख कर वाह-वाह करें, मेरे पहनावे जैसा अनुसरण करें, मेरे शरीर की हर क्रिया को सराहें, ये तमोप्रधान इच्छाएँ, ज़हर की तरह समाज की नस-नस में प्रवाहित हो रही हैं। इनकी पूर्ति के उद्देश्य से हजारों जघन्य काण्ड होते हैं फिर भी कामनाओं और इच्छाओं के राक्षस की भूख शान्त नहीं होती है।** आज शिखर से लेकर तली तक हर व्यक्ति इस राक्षस की निर्दयी चक्की में पिस जाने की मजबूरी झेल रहा है। प्राचीन साहित्य के सैंकड़ों उदाहरणों द्वारा और वर्तमान समय प्रतिदिन घटने वाले समाचारों को जान कर मानव को अब तो जागृत हो जाना चाहिए। नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब कि इच्छाओं की आग समस्त विश्व को भस्म कर देगी और कोटों में कोऊ मनु (मननशील) ही इस भस्मीभूत सृष्टि में से त्याग और प्रेम की नई जीवन-कोपल को प्रकट कर सकेगा। एक प्राचीन कथा का उल्लेख शिक्षार्थ यहाँ किया जा रहा है –

मिथिला का राजा निमि इच्छापूर्ण करके सुखी होना चाहता था लेकिन सभी जानते हैं कि कामनापूर्ति से कामना बढ़ती है। एक रानी होते हुए भी उसे दूसरी रानी लाने की इच्छा हुई, फिर तीसरी, चौथी, पाँचवी और यह इच्छा कई रानियाँ लाने पर भी मुश्किल से ही शान्त हो पाई। इसके बाद भोगते-भोगते शरीर भोगा गया, शरीर रोगी हो गया परन्तु कामनाएँ तो अब भी उतनी ही मात्रा में, उसी दशा में मौजूद थीं। राजा को दाहज्वर हो गया। उसकी हालत देख कर हकीमों ने कहा कि मृत्यु का समय निकट है। अब केवल एक ही उपाय है कि कोई प्रेम से चंदन घिसे और राजा के शरीर पर लेप करे, इससे थोड़ा आराम हो सकता है। कामनाएँ दाह, वेदना, तपन पैदा करती हैं। भय, शोक, ईर्ष्या और चिंता पैदा करती हैं। दु:ख की यात्रा कराने वाली कमबख्त कामनाएँ ही हैं। नहीं तो कौन भला किसी को दु:ख में ले जा सकता है? रानियाँ प्रेम से चंदन घिसने लगी। ऐसा करते हुए उनके हाथों की चूड़ियाँ खनकती थीं। राजा को उस आवाज़ से भी पीड़ा हो रही थी। उसने कहा - 'चंदन घिसना है तो घिसो किन्तु आवाज़ मत करो।' रानियों ने सौभाग्य की निशानी के रूप में एक-एक चूड़ी हाथ में रखी और शेष सब उतार कर रख दीं, आवाज बंद हो गई। राजा ने कहा - 'चंदन घिसना बंद कर दिया क्या?' 'नहीं, चंदन तो घिस रहे हैं लेकिन हाथों में चूड़ियाँ ज्यादा थीं इसलिए खनक रही थीं, अब एक ही चूड़ी रखी है बाकी उतार कर रख दी हैं', रानियों ने उत्तर दिया। राजा निमि का पूर्व का कोई पुण्य उदय हुआ। उसका चिन्तन चला कि बहुतों में खटपट होती है। अकेले में ही शान्ति है। वह उसी दाहज्वर में उठा,

गृहलक्ष्मी और राजलक्ष्मी को दूर से प्रणाम करके आत्मलक्ष्मी पाने के लिए अध्यात्म के द्वार जा बैठा।

अमीरी की तो ऐसी की कि सब
जर (सोना) लुटा बैठा।
फकीरी की तो ऐसे की कि ज्ञान
के द्वार पर आ बैठा।।

वह ऐसा फकीर बन गया कि उसने इच्छा-वासनाओं से मुख फिरा लिया। संशय व फिकर से नाता तोड़ लिया। मौत के पहले आत्मस्थिति में स्थित हो गया। भोगसम्राट से योगसम्राट हो गया। वास्तव में आत्मा मूल स्वरूप में योगसम्राट ही है लेकिन अन्तहीन कामनाएँ ही उसे भोग का कीड़ा बना देती हैं। इसलिए हे मानव, कामनाओं के काले नाग को मत पालो, कामनाओं का काम तमाम करो। भगवान शिव कहते हैं - मीठे बच्चे! सर्व कामनाओं की पूर्ति करने वाली कामधेनु माँ जगदम्बा के बच्चे बन कर और त्रिलोकीनाथ पिता से कल्पवृक्ष का ज्ञान पाकर भी आपकी कौन-सी कामनाएँ बाकी है? अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों के खजाने में। इसलिए सदा भरपूरता का, सन्तुष्टता का, आत्मिक तृप्ति का और कामनाजीत स्थिति का अनुभव करो। कामनाओं के दास बनने के बजाए उन्हें अपनी दासी बना लो।

प्रथम गुरु - नारी

–देवीचन्द कौशिक, उत्तम नगर, देहली

नारी तू शिव शक्ति है, कल्याणी है, सुखकारी है।
वात्सल्य ममता मूरत, तू सचमुच माता प्यारी है।।
तू राम जननी कौशल्या है, देवकी, यशोदा मैया है।
मन्त्रों की माता गायत्री, तू भवसागर की नैया है।।
तू ही अनुसूईया साविति, तू ही राधा और सीता है।
रामायण, महाभारत की, तू गाथा परम पुनीता है।।
नारायण के संग लक्ष्मी, शिव के संग शक्ति भवानी है।
तू प्यारी वैष्णवी माता, जन-मन इच्छित वरदानी है।।
सन्तोषी माता बन करके, सन्तोष हृदय में भरती है।
मनसा पूर्ण करने को, तू मनसा देवी बनती है।।
शक्ति के अनेक रूपों में, तेरी सत्कर्म कहानी है।
पर्वत-पर्वत, मन्दिर-मन्दिर, तेरी ही अमिट निशानी है।।
सन्त-ग्रन्थ, कीर्तन न्यारे, नित कथा, आरती, जयकारे।
शंख और घंटे प्यारे, तेरी महिमा गाते सारे।।
तू ही बचपन को मुस्काती, वृद्धों का तू ही सहारा है।
तू गति देती, तू मति देती, सचमुच तू जीवन-धारा है।।
अंकुर से पत्र, पत्र से कली, कली से फूल खिलाती तू।
सौरभ, काँति और ज्योति से, जीवन को नित्य सजाती तू।।
कारीगर और कलाकार बन, नित श्रृंगार सजाती है।
सुन्दर समाज-हित जीवन में, सुन्दर संस्कार बनाती है।।
मुख से शीतल, उर से कोमल, मन से तू निर्मल धारा है।
तूने ही डगमग बचपन को, बाँहों का दिया सहारा है।।
ईश्वर केवल जीवन देता, जीवन को जन्म तू ही देती।
पालन-पोषण और सेवा में, बलिदान स्वयं को कर देती।।
सब पीर पैगम्बर महापुरुष, युग पुरुष और जो अवतारी।
तेरी गोदी में पले सभी, तू सबकी माता साकारी।।
तेरे उपकारों से बोझिल, सत्कार तेरा हम करते हैं।
हे प्रथम शिक्षक, प्रथम गुरु, हम वन्दे मातरम् करते हैं।।

कर्म और फल

- ब्रह्माकुमारी राजिन्द्र कौर, रतिया

प्रकृति के इस नियम को कभी झुठलाया नहीं जा सकता कि आम के बीज से आम तथा बबूल के बीज से बबूल ही पैदा होगा। सृष्टि पर पैदा हुआ प्रत्येक प्राणी अपने ही किए हुए कर्मों का कड़वा या मीठा फल चखने के लिए बाध्य है। वैज्ञानिक भी इस सिद्धान्त को मानते हैं कि 'हर क्रिया की समान और विपरीत प्रतिक्रिया' होती है। एक गेंद को हम जितना जोर से दीवार के साथ मारते हैं, वह उतने ही जोर के साथ वापिस लौट कर आ जाती है। आध्यात्मिक भाषा में इसे ही कर्मफल या 'जैसी करनी वैसी भरनी' कहा जाता है।

प्रत्येक प्राणी की यह चाहत सदैव बनी रहती है कि उसका जीवन आनन्दित हो, प्रफुल्लित हो, खुशहाल हो, बहारों से भरपूर हो, गम से दूर हो। इसके लिए वह जीवन-भर तरह-तरह के प्रयत्न करता है। सुख की सामग्री जुटाता है। नए-नए संबंध बनाता है। देवी-देवताओं के आगे मनौतियाँ माँगता है। पूजा-पाठ करते हुए भी भगवान से यही प्रार्थना करता है कि हे भगवान, मेरा सदा मंगल-ही-मंगल हो। मेरा धन-दौलत बना रहे। मुझे कभी दुःख या धोखा न मिले। परन्तु न चाहते हुए भी दुःख रूपी शूल और त्रिशूल उसे चुभते ही रहते हैं। ऐसा क्यों ?

कर्म करने के लिए हम सभी स्वतन्त्र हैं परन्तु कर्म करना भी एक कला है। कर्म देवताओं ने भी किए। कर्म साधारण गृहस्थी भी करता है। कर्म एक डाकू भी करता है और डॉक्टर भी। हम अच्छी या बुरी जैसी भी भावना से कर्म करते हैं, वैसा ही अच्छा या बुरा फल सामने आता है। कर्म और फल का आपस में इतना गहरा संबंध है जैसे सूर्य और प्रकाश का, चाँद और चाँदनी का, दीपक और लौ का। जीवन में यदि एक के बाद एक दुःख लगा रहता है तो यह पूर्वजन्म के पापों का ही दण्ड है। अकारण कुछ भी नहीं घट रहा। बिना बीज के तो घास भी पैदा नहीं होता। तो फिर बिना कर्म किए उनका फल जीवन में कैसे आ सकता है ?

संकल्प ही कर्मों के बीज हैं। संकल्प रूपी बीज जितना शुद्ध और शक्तिशाली होगा उतना ही कर्म श्रेष्ठ होगा। यदि बीज ही घटिया किस्म का होगा तो फसल भी अच्छी नहीं होगी। जो कर्म शुभ भावनाओं से प्रेरित होकर दूसरों के कल्याण के लिए किए जाते हैं, वे सुख-शान्ति और संतोष देते हैं। जो दुर्भावनाओं से पीड़ित होकर दूसरों को सताने के लिए, दुःख देने के लिए, नीचा दिखाने के लिए किए जाते हैं, वे कर्म पाप के खाते में जमा होते हैं। ऐसे कर्म मनुष्य को अल्पकाल के लिए झूठी खुशी भले दें परन्तु दूसरों से बददुआएँ और बदनामी ही दिलाते हैं। जो कर्म झूठी शान या दिखावे के लिए किए जाते हैं, वे कर्म ढोंग या पाखण्ड बन कर सामने आते हैं। अच्छे-बुरे कर्मों से ही कोई बदनामी, तो कोई सम्मान पाता है।

कर्मों की गति कितनी सूक्ष्म और गहन है, इस पर एक कहानी याद आती है। एक बार एक गरीब और एक अमीर दो मित्रों ने व्यापार के लिए बाहर जाने की योजना बनाई। रास्ते में एक सुनसान स्थान पर गरीब मित्र के मन में लोभ-वृत्ति जागी। उसने सारा धन हड़पने के लक्ष्य से अमीर मित्र के सिर पर प्रहार किया। वह दर्द के मारे चीख उठा। आवाज सुन कर दूर की झोपड़ी से एक बुढ़िया निकल कर घटनास्थल पर आ गई। बुढ़िया को देखते ही गरीब मित्र को भय लगा कि यह जरूर जाकर सबको बता देगी इसलिए इसे भी मार देना चाहिए। बुढ़िया उसकी मनसा को समझ गई और अपनी जान बचाने के लिए कहने लगी - ''बेटा, मुझे मत मार, मैं किसी को भी नहीं बताऊँगी।'' उसने बुढ़िया को तो छोड़ दिया और मित्र के मृतक शरीर को

वहीं गाड़ कर घर चला गया। परिवारजनों, मित्रों व संबंधियों को उसने मित्र की मृत्यु की बनावटी कहानी सुना कर झूठा शोक मना लिया। दो वर्ष बाद वह बहुत धनवान बन गया। इन वर्षों में ही उसके घर एक पुत्र ने जन्म लिया। खूब लाड-प्यार से पालन-पोषण किया गया। बड़ा होने पर धूमधाम से शादी की। शादी के कुछ दिनों बाद ही वह पुत्र बहुत बीमार हो गया। बड़े-बड़े डॉक्टर, हकीम, वैद्य बुलाए गए लेकिन आराम न आया। जब पुत्र सदा की नींद सोने वाला था तो उसे पूर्वजन्म की घटना स्मरण हो आई। उसने कहा - ''पिताजी, मैं आपका वही धनवान मित्र हूँ, जिसे पैसे के लिए आपने बीच रास्ते में मारा था। मेरी पत्नी वही बुढ़िया है जिसने पाप तो देखा परन्तु छिपा कर रखा। उसका फल यह मेरी मृत्यु के दु:ख के रूप में पाएगी। मैंने अपना धन ब्याज समेत बीमारी पर लगवा लिया। अब मैं यहाँ से जा रहा हूँ। यह कहते ही उसके प्राण तन से निकल गए। उसके पिता के पास अपने किए पर पश्चाताप करने के सिवाय कुछ नहीं बचा था।

काले कर्मों की छाया से कोई भी बच नहीं सकता। बड़ों-बड़ों को भी इसके आगे घुटने टेकने पड़ते हैं। पाप-कर्म भले ही कोई किसी से छिपकर कर ले परन्तु समय की गति के अनुसार उसे किसी भी घड़ी, किसी भी स्थान पर उनका भुगतान करना पड़ता है। **कर्म हम न स्वयं से, न भगवान से छिपा सकते हैं। कर्म ही भविष्य बनाता है। कोई हँस रहा है, कोई रो रहा है, कोई मूर्ख है तो कोई विद्वान है, कोई भिखारी है तो कोई बादशाह, कोई अंधा है और कोई खूबसूरत, कोई पागल है और कोई वैज्ञानिक - सब पद कर्म अनुसार ही मिलते हैं।**

हम अपने भाग्य के स्वयं निर्माता हैं। मनुष्य जब दु:खों का बोझा ढोते-ढोते थक जाता है तो खुद को ही दोषी मानते हुए कहता है कि मैंने इस जन्म में तो कुछ बुरा नहीं किया, फिर भी पता नहीं भगवान मुझे कौन-से जन्म का दण्ड दे रहा है? यह दण्ड भगवान नहीं देता पर सूक्ष्म मशीनरी ऐसी है जो स्वत: मिल जाता है। पंजाबी में कहते हैं –

''दूजेआँ नूँ दु:ख देके,
आप चाहे सुख नूँ,
लगदा नी फल कदे,
जड़ों सड़े रुख नूँ।''

भावार्थ है कि जिस प्रकार जड़ों से सड़े हुए वृक्ष को फल नहीं लगता वैसे ही दु:ख देके सुख नहीं पाया जा सकता। मानव के जीवन से दु:खों की बदली छँट जाए, सुखों की झड़ी लग जाए, उसके लिए वह श्रेष्ठ कर्म करे। सत्कर्मों की राह पर चलाने के लिए हमारे सत्पुरुषों, ऋषियों या गुरुओं ने जीवन के हर मोड़ पर सदा प्रकाश-स्तम्भ का काम किया। वेद, उपनिषद्, श्रीमद्भगवद्गीता, ग्रन्थ जैसे पवित्र शास्त्र हमें मिले। साम, दाम, दण्ड, भेद जैसी चाणक्य नीतियाँ भी हमें मिली। फिर भी संसार कर्म कूटने की स्थिति में पहुँच गया है। इस स्थिति से उबारने के लिए दयालु, कृपालु, सृष्टि रचयिता भगवान शिव गुप्त रूप से पिताश्री ब्रह्मा के मुखकमल द्वारा कर्मों की गति का गुह्य-ज्ञान दे रहे हैं। **भगवानुवाच है कि जो कर्म आत्मिक स्थिति में स्थित होकर किए जाते हैं, वही सत्कर्म हैं** और जो कर्म देह-अभिमान में किए जाते हैं, वे रुलाते हैं। ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार अब संगमयुग चल रहा है, इसे ही कल्याणकारी पुरुषोत्तम युग कहते हैं। इस युग में हम श्रेष्ठ कर्मों के बीज बोकर श्री लक्ष्मी, श्री नारायण के समान पूज्य-पद पाकर सृष्टि के मालिक बन सकते हैं। तो आइए, हम इस छोटे से सुनहरी काल में हीरे जैसे जीवन में उजले कर्म करें ताकि हमें कभी भी दु:ख रूपी बबूल चुभने न पाएँ। हम अपने भाग्य के गीत गाते रहें और सुख रूपी आमरस पीते रहें।

☆☆☆

प्रभु ने लुटाया प्यार और दुलार

– ब्रह्माकुमारी कैलाश बहन, जम्मू

घूमते हुए कालचक्र के साथ हम कल्प के अन्तिम युग कलियुग को पार करके उस सन्धिकाल पर आ पहुँचे हैं जहाँ कलियुग की अनैतिकता की पराकाष्ठा भी साफ दिखाई पड़ रही है और शान्ति और समृद्धि की चिकनाहट के साथ तीव्र गति लिए सतयुगी सृष्टि भी हमारी ओर बढ़ रही है। इसमें कोई शक नहीं कि जीवन का वर्तमानकाल आनन्द और उल्लास से भरपूर है परन्तु इसकी जड़ें कितने कठोर प्रहारों को सहकर मजबूती से खड़ी रह पाई हैं, उनकी याद मात्र ही सिहरन पैदा कर देती है। किसी ने सत्य ही कहा है कि कलियुग में जीवन रूपी वस्त्र दु:ख और सुख के तन्तुओं से मिलकर बुना जाता है परन्तु मेरे जीवन-वस्त्र में पहले प्रकार के तन्तु अधिक हैं।

मात्र 5 मास की थी कि जननी का साया सिर से उठ गया। एक मास बाद ही ईर्ष्या भरी रंजिश के कारण किसी ने पिताजी की भी हत्या कर दी। रह गए हम 3 भाई-बहनें रोते और बिलखते हुए। बड़ी बहन 15 वर्ष की थी, भाई 2 वर्ष का और मैं केवल 6 महीने की। चाचाजी का घर पास ही था। उन्हें भी धमकियाँ मिली थीं इसलिए वे हम तीनों भाई-बहनों को गोद में छिपाकर, जमीन जायदाद को वहीं छोड़कर सदा के लिए उस गाँव को अलविदा कह कठुआ में आ बसे। वहाँ जाते ही भाई की मृत्यु हो गई और बहन की शादी हो गई। मैं कभी बहन के पास और कभी चाचाजी के पास एक टूटी हुई गेंद की तरह निष्प्रयोजन उछाली जाती रही। मैं एक ऐसा जीवन थी जिसकी किसी को जरूरत नहीं थी, हर किसी की मार-पिटाई सहना, डाँट खाना, जी हजूरी करना, छिप-छिप कर रोना और जी तोड़ मेहनत कर लकड़ियाँ और घास ढोना ही मेरे नसीब में लिखा हुआ था।

इस पर भी मुझमें पढ़ने की अदम्य ललक थी। सारा दिन काम में व्यस्त रहने पर भी मैं जैसे-तैसे 8वीं तक पढ़ गई। समझ बढ़ने पर यह अहसास गहराई तक छूने लगा कि संसार में कोई किसी का नहीं है और मुझे भगवान की शरण मिल जाए तो बहुत अच्छा है। इसके लिए कई तथाकथित धार्मिक लोगों के सामने अपना मन्तव्य रखा भी परन्तु कोई भी जीवन को अध्यात्म का सही पथ न दिखा सका। निराधार जीवन के दो आधार मैंने बना रखे थे। एक

श्रीकृष्ण जी तथा दूसरी दुर्गा मैया। दोनों को ही भैया और मैया के रूप में देखने से मन को शान्ति मिलती थी।

उम्र बढ़ने पर वही हुआ जो सबके साथ होता है। मेरी शादी बहन ने अपने देवर के साथ कर दी जो किसी कम्पनी की गाड़ी चलाता था और नशे का अत्यधिक आदी था। घास की बनी झोपड़ी में मेरा गृहस्थ जीवन प्रारम्भ हुआ जहाँ रोटी के स्थान पर शराब की बोतल की मार झेलनी पड़ती थी और सम्बन्ध के नाम पर शंका भरे कटु बोल और अपशब्द झेलने पड़ते थे। मैं एक-एक करके चार बच्चों की माँ बन गई। भूख से बिलबिलाते बच्चों के पेट का प्रबन्ध मैंने जंगल की लकड़ियाँ बीनकर और बेचकर किया। कभी चाय के लिए तरस जाते थे और कभी किसी अन्य आवश्यक चीज के लिए। रिश्ते-नाते के लोग आस-पास थे परन्तु जिन

अभागे बच्चों का बाप ही उनको न पूछता हो तो अन्य से गुहार कैसी?

एक दिन मैंने एक महात्मा जी को घर के आगे से गुजरते देखा। मैंने उसे अपनी व्यथा सुनाई। उसने मुझे सारी रात दीपक जलाकर उसकी लौ को देखते-देखते रात गुजारने की एक विधि बताई। मैंने ऐसा ही किया। सुबह होने पर मैंने पाया कि मुझमें नया बल और जोश आ गया है। शायद जलती दीपशिखा को देखते-देखते मेरे भीतर का बुझा आत्म-तेज भी जागृत हो गया था। मैंने दृढ़ संकल्प किया कि कहीं जाना चाहिए, प्रयास करना चाहिए, नौकरी तलाशनी चाहिए। मैं कहीं से रुपयों का प्रबन्ध कर जम्मू गई और वहाँ नर्स बनने के लिए प्रार्थना-पत्र दे आई। मुझे कोर्स के लिए चुन लिया गया। दो वर्ष के प्रशिक्षण के बाद मुझे डिप्लोमा मिला और फिर सरकारी नौकरी भी लग गई।

माँ-बाप दोनों मिलकर कर्त्तव्य का पालन करें तो बच्चे के विकास में सकारात्मक गुण झलकते हैं परन्तु यहाँ तो मजबूरी यह थी कि पिता के होते हुए भी मुझे ही माँ-बाप दोनों की भूमिका निभानी पड़ रही थी। मैंने सभी बच्चों को पढ़ाने का लक्ष्य मजबूती से थामे रखा। पिता के दूर रहने पर भी, बच्चे पिता के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त रह पाए हों, ऐसा नहीं था। पिता वाले निम्न कोटि के संस्कार उनके कर्मों में भी कभी-कभी चोरी आदि के रूप में रंग दिखा देते थे परन्तु ममता-वश मैं सब कुछ झेलकर भी शुभ भाव बनाए रखती थी। दो बच्चों की पढ़ाई 10वीं तक मेरे द्वारा हुई और दो बच्चों को दसवीं तक रेडक्रॉस सोसायटी और वेदआश्रम ने पढ़ाया। मैं उनकी विशेष आभारी हूँ।

मैं पाठकों को यह बताना चाहती हूँ कि भारतीय समाज में पति द्वारा ठुकराई हुई, दु:खी नारी बच्चों में सहारा खोजती है। आमतौर पर वह सपना पालती है कि मैं रूखा-सूखा खाकर, जागकर, भाग-दौड़कर के अपने बच्चों को पाँव पर खड़ा कर दूँ तो कल इनको सुखी देखकर मैं अपना दु:ख भूल जाऊँगी। जब ये अपना घर-परिवार बसाएँगे, आँगन में चहल-पहल मचेगी तो शायद मेरे दु:खों के घाव भर जाएँगे। परन्तु यह हसीन सपना भी बच्चों की शादी होते ही पतझड़ के पत्तों की तरह बिखर जाता है। मैंने देखा कि बच्चे सब अलग-अलग हो गए और मैं पुन: अपनी नौकरी के साथ अकेली रह गई। हाँ, बच्चों के पिताजी को शराब से कैन्सर हुआ, तब उन्हें मेरी याद आई। सेवा के लिए मुझे ले गए। अभी 20 दिन भी सेवा करते नहीं हुए थे कि उसके प्राण पखेरू उड़ गए। मैं वापस अपनी दिनचर्या में ढल गई।

जीवन सर्व बन्धनों और जिम्मेवारियों से मुक्त होकर नितान्त अकेला हो गया था। परन्तु कभी-कभी यह अकेलापन काटता था। मन खाली-खाली रहता था। सदा दिल शिकायत करता था कि जीवन में इतना संघर्ष करके भी क्या हाथ लगा। न खुशी थी न भरपूरता। गम का आवरण संकल्पों के चारों ओर लिपटा रहता था। ऐसे में खाली समय को भक्ति की झंकार से भरने की कोशिश की। सुबह चार बजे उठना, मन्दिर जाना, मोहल्ले की माताओं-बहनों को साथ चलने के लिए प्रोत्साहित करना, गीता पढ़ना, सुनाना, प्रवचन करना, हिन्दू धर्म के प्रति आस्था जगाना ये मेरे रोज के कार्य हो गए। सारा दिन श्री कृष्ण और श्री दुर्गा से मन-ही-मन बातें कर मैं अकेलेपन को दूर करने का प्रयास करती। मेरी भक्ति की लगन को देखकर मुझे महिला सत्संग की अध्यक्षा बना दिया गया। मेरा मान-शान भी बढ़ गया। सत्संग कराने के लिए निमन्त्रण मुझे मिलने लगे। जान-पहचान बढ़ गई। लोगों की भावना भी मुझमें बैठ गई। परन्तु मेरे दिल के कोने से यह आवाज़ आती थी कि मुख से गाने के बजाय, हाथों से बजाने के बजाय मुझे कोई ऐसा सत्संग सिखा दे जिसमें मन का सिमरण हो, एकान्त में बैठकर मन

प्रभु प्रेम में डूब जाए।

परमात्मा पिता ने मेरी यह आशा भी शीघ्र पूरी कर दी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आगे से गुजरते समय मैं रोज अन्दर जाने के लिए सोचती पर अन्तर की झिझक मेरे पाँवों को वापस मोड़ देती। एक दिन मैंने इस झिझक पर काबू पाया और अन्दर चली गई। वहाँ मुझे जिन दो चीजों ने अपने में बाँध लिया, वे थीं - शान्ति और पवित्रता। सफेदी से ढकी हर चीज में से शान्ति के प्रकम्पन फैल रहे थे। वहाँ आत्मा, परमात्मा तथा सृष्टि के बारे में जो कुछ सुनाया उसने मुझे भीतर तक प्रभावित कर लिया। मुझे लगा कि यही सब तो है जिसे मैं आज तक ढूँढ़ रही थी। साप्ताहिक कोर्स के बाद मैं नियमित विद्यार्थी बन गई। दो मास के बाद ही मुझे मुख्यालय में जाकर भगवान का अवतरण इन आँखों से देखने और अनुभव करने की अनुमति मिल गई। मुझे परमात्मा पिता का सत्य परिचय मिल गया। शिव-शंकर में क्या अन्तर है, यह गुत्थी सुलझ गई। दादी हृदयमोहिनी जी के तन में अवतरित परमात्मा शिव से नेत्र-मिलन करके यकीन हो गया कि देवों का देव यही भगवान शिव है। मेरे मन में शुक्रिया बाबा, शुक्रिया बाबा ...... की माला-सी फिरने लगी। मन नाच उठा - हे प्रभु! मैं कहाँ, कैसी थी, आपने ढूँढ़ लिया, अपना भी बना लिया, विश्वास नहीं हो रहा कि मेरा भाग्य इतना अच्छा है!

अब तो आबू मेरा सच्चा घर बन गया। अब घर में भी मन सन्तुष्ट रहने लगा। बाबा को साथ लेकर नौकरी पर जाती हूँ, साथ रखकर भोजन पकाती हूँ, साथ में खिलाकर खाती हूँ, बच्चे अलग-अलग मकानों में रहते हैं। मन में किसी के लिए कोई शिकवा नहीं है। इतना उपकार प्रभु ने कर दिया तो और क्या कामना रखना! परमात्मा पिता ने कहा है - 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा'। इस धारणा की पालना स्वतः हो रही है। सभी की खुशी में मैं खुश हूँ, किसी से कुछ चाहिए नहीं, किसी से मोह-राग-आकर्षण नहीं। आश्रम तक पहुँचने में मुझे लगभग 1 घण्टा लग जाता है। रास्ते में किसी-न-किसी को ज्ञान की दो बातें सुनाना मेरा काम बन गया है। कोई बड़ा न मिले तो बच्चों को भी ज्ञान से बहलाकर मैं अपना नियम पूरा कर लेती हूँ और बाद में ही नाश्ता करती हूँ। परमात्मा पिता जो प्यार, दुलार और सत्कार दे रहे हैं वह अवर्णनीय है। मन खुशियों से सराबोर है, भविष्य की कोई चिन्ता नहीं है, याद और सेवा की लगन में श्वास सफल होते जा रहे हैं। अब कुछ नहीं चाहिए, सब चाहनाएँ पूरी हो गई हैं।

❖❖❖

युवा संकल्प

– ब्र.कु. उमेश, सितारगंज, उत्तरांचल

विश्व परिवर्तन की वेला में, आओ मिल कर काम करें।
तन-मन-धन अर्पण कर, प्यारे ईश्वर का सम्मान करें।।
परमात्म-ज्ञान को समझें, फिर उसका विस्तार करें।
ज्ञान-योग का मरहम लें, हर पीड़ा का निस्तार करें।।
जीवन के विकट मार्ग पर, मुस्करा कर प्रस्थान करें।
सत्य मार्ग पर सदा चलें, नारी शक्ति का सम्मान करें।।
जो जीवन को महकाये, उस पौधे का फूल बनें।
शीतलता दें सबको हम, पथ का कहीं न शूल बनें।।
परमपिता की पुण्य स्मृति से, विकारों का सर्वनाश करें।
खुशियाँ बाँटें घर-घर में, हर मानव में उल्लास भरें।।
देहभान के भेद भुला कर, हर मानव से प्यार करें।
हम हैं युवा इस विश्व के, आओ, दैवी संस्कृति का आधार धरें।।

अब ज़रूरत है गुण-दान की

– ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

सहनशीलता एक बड़ा भारी गुण है। इस गुण को जिन्होंने व्यवहारिक रूप से धारण करके दिखाया है उनके उदाहरण हम जहाँ-तहाँ सुनते हैं, उन्हें महान मानते हैं और उनके आगे नतमस्तक होते हैं। कोई व्यक्ति यदि कष्टकारी बात या परिस्थिति को हँसते-हँसते सह जाता है तो जल्दी या देर से, सामने अथवा पीठ पीछे उसकी महिमा अवश्य होती है। सहनशील को रिंचक भी महसूसता नहीं होती कि वह सहन कर रहा है। परन्तु देखने-सुनने वालों को लगता है कि इतने कड़वे घूँट को यह कैसे पी गया ? वास्तव में, सहन करने की योग्यता तभी आती है जबकि व्यक्ति लौकिक मान, शान, प्राप्तियों तथा अन्य व्यवित, वस्तु, वैभव तक बिखरे अपने अस्तित्व को समेट कर अपने अविनाशी रूप में स्थित हो जाता है। अपने को अविनाशी, अणु सदृश्य आत्मा मान कर ही अपने सारे कार्य व्यवहार निपटाता है। इस संसार के भीड़-भड़ाके और रेलम-पेल में न फँसता है, न उलझता है बल्कि सावधानीपूर्वक मन रूपी पल्लू को बचा लेता है।

कोई व्यक्ति यदि कीचड़ उछालता है तो सहनशील व्यक्ति अपने अस्तित्व को उससे इतना दूर कर लेता है कि उसे उस कार्य से न हानि होती है और न संकल्पों-विकल्पों की उलझन क्योंकि वह जानता है कि इस समय इस व्यक्ति के भीतर दबा दु:ख या आक्रोश बोल रहा है, अहंकारजनित उसकी असहनशीलता उससे अमर्यादित शब्द बुलवा रही है। जिस प्रकार फोड़े से बहती मवाद को देख कर डॉ. हताहत नहीं होता, वह जानता है कि मवाद निकलने से मरीज को राहत मिलेगी। इसी प्रकार अपनी इच्छा के विरुद्ध बातों को पचाने की जिसमें शक्ति नहीं होती, उसे उनकी बदहजमी हो जाती है और वाणी के द्वारा उन्हें बाहर निकलते देख **सहनशील व्यक्ति यही सोचता है कि इन अपचित बातों के निकल जाने में ही कल्याण है। इस प्रकार गलत बोलने वाले को भी आराम पहुँचाने के लक्ष्य से, उसे हल्का करने के लक्ष्य से अथवा उसके भरे हुए दिल को खाली कर वहाँ परमात्मा को स्थान दिलाने के लक्ष्य से वह साक्षी हो सब सुन लेता है, समा लेता है। वह, चपल बालक की तरह अस्थिर उसके चित्त को अपनी करुणा और रहम का सहारा देकर स्थिर कर देता है।** यह अनुभवजन्य तथ्य है कि गर्वित व्यक्ति के मुँह लगने से, उसका सामना करने से हम उससे दो कदम नीचे उतर जाते हैं क्योंकि एक प्रकार से हम उसी का अनुकरण कर रहे होते हैं परन्तु यदि हम शुभ भावना रखते हैं तो निश्चय ही हमारी महानता आसमान की बुलन्दियों तक पहुँच जाती है।

एक ऐसी घटना का स्मरण मुझे आ रहा है जिसका उल्लेख यहाँ प्रासंगिक होगा। एक बार अस्थाई अध्यापकों के एक शिविर में हमें ज्ञान-चर्चा के लिए आमन्त्रित किया गया। वहाँ पहुँच कर ज्योंहि हमने 'ओमशान्ति' शब्द का उच्चारण किया तो पीछे से एक दुबले-पतले अध्यापक की आवाज गूँजी - 'हमें शान्ति नहीं क्रान्ति चाहिए।' उसके इन शब्दों से सभा में विराजमान कुल 25 अध्यापकों में से कुछ के चेहरे पर हँसी की रेखाएँ उभरीं और कुछ के चेहरे पर रोष की। इसके बाद चुप्पी छा गई और हमने आत्मा का परिचय देना प्रारम्भ किया। अभी कुछ शब्द ही बोले होंगे कि वह पुन: बोल उठा - 'आपके संस्थान में पापियों को शरण क्यों दी जाती है।' हमने सहज भाव से उत्तर दिया कि गंगा का कार्य सबको शीतल जल में स्नान

कराना है, वह यह नहीं देखती कि कौन अजामिल है और कौन उजला। इसी प्रकार, हम भी जो दर पर आता है उसे ईश्वरीय ज्ञान का और श्रेष्ठ कर्मों के ज्ञान का संरक्षण प्रदान करने के लिए वचनबद्ध हैं। जैसे फायर ब्रिगेड वाले यह नहीं देखते कि आग पापी के घर लगी है या पुण्यात्मा के घर, चिकित्सक यह नहीं देखता कि रोगी अच्छा व्यक्ति है या बुरा, इसी प्रकार, राजयोग भी यही सिखाता है कि सभी को ज्ञान दो और यदि ज्ञान लेने वाला, किसी भी कारण से, अधिक पतित है तब तो वह अधिक करुणा का, अधिक सहयोग का और अधिक संवेदना का पात्र है न कि तिरस्कार का।

इस उत्तर से सभा में विराजमान अन्य सभी को तो सन्तोष की अनुभूति हुई परन्तु उस व्यक्ति के माथे की लकीरें अभी भी नहीं सुलझ पा रही थीं। हमने उसे स्नेह और सहयोग से सम्पन्न ज्ञान-वचनों का सहयोग दिया परन्तु उसकी आन्तरिक आग इतनी तीव्र थी कि उस पर वे शब्द पड़ते ही वाष्प बन कर उड़ जाते थे। इसके बाद भी उसके टोकने का क्रम जारी रहा। कभी-कभी उसने अधिक तीखी प्रतिक्रिया भी की परन्तु हम कभी चुप्पी से और कभी शान्ति से उत्तर देकर उसे सन्तुष्ट करने का प्रयास करते रहे। पाठ पूरा होने के बाद उस व्यक्ति ने अपनी कहानी सुनाई कि ''एक व्यक्ति ने मेरा बहुत अहित किया है, वह आपके आश्रम में ज्ञान सीखने जाता है, आश्रम का सहारा पाकर वह पाँव पर खड़ा हो गया है, मेरी इच्छा थी कि वह दर-दर भटके। इसी बात का मुझे रंज है। मैं चाहता हूँ कि आश्रम वाले उसे अन्दर न आने दें, फिर मैं उसे देख लूँगा।'' उसके मुख से इस घटना को सुन कर हम समझे कि उसमें प्रतिशोध की आग किसी अन्य के प्रति इतनी धधक रही है कि हमारे मीठे, स्नेह भरे, उचित शब्द भी आग की उस गर्मी को कम नहीं कर पा रहे हैं।

सभी शिक्षकों से प्रेम भरी विदाई लेकर हम आश्रम पर लौट आए। कुछ दिनों के बाद एक समारोह में मुझे एक अध्यापिका बहन मिली जो कि उपरोक्त घटना के दिन शिक्षकों के शिविर में उपस्थित थी। उसने कहा - ''उस दिन मैं आपकी सहनशीलता देख दंग रह गई। उस अध्यापक ने आपके प्रवचन के दौरान इतना व्यवधान डाला। ज्ञान के बारे में अपशब्द कहे, फिर भी आप उसे शान्ति और स्नेह ही देती रही। बाहर आकर भी आपने यही कहा कि वह मेरा भाई है, इसके भीतर किसी अप्रिय घटना से उपजी पीड़ा ने घर कर लिया है इसलिए यह नफरत का नहीं, स्नेह और क्षमा का पात्र है। आपकी वह बात मुझे अब तक याद है। मैंने घर जाकर सबको सुनाई, मैं भी अपने घर के नजदीक की शाखा में जाती हूँ, बहुत अच्छा लगता है।'' मैंने प्रत्युत्तर में कहा - ''हमने तो भगवान की आज्ञा का पालन किया, इसमें हमारी क्या बड़ाई है, बड़ाई तो भगवान की है जिसने इतनी श्रेष्ठ शिक्षा दी है।''

एकान्त में बैठ कर मैंने इस घटना पर विचार किया तो मन में प्रश्न उठा कि कौन-सी बात है जिसका प्रभाव ज्ञान से भी ज्यादा पड़ता है? तब मन में प्यारे बाबा की शिक्षाओं के आधार पर यही उत्तर आया कि ज्ञान-दान से ज्यादा ज्ञान सुनाने वाले के व्यक्तित्व से झरते गुणों को देख लोग जल्दी और अविनाशी रूप से आकर्षित होते हैं। उस अध्यापिका बहन ने, प्रवचन में क्या अच्छा लगा उसका बिल्कुल भी उल्लेख नहीं किया। लेकिन सहनशीलता, शान्त प्रतिक्रिया, रहम भावना और क्षमाशीलता का बार-बार उल्लेख किया। **प्यारे बाबा भी कहते हैं - बच्चे, अब ज्ञान-दान के बजाए गुण-दान और शक्ति-दान के द्वारा आत्माओं को बाबा के नजदीक लाओ। गुण-दान मुख से नहीं, श्रीमत प्रमाण कर्म करने से और श्रीमत प्रमाण मन की स्थिति बनाने से होता है।**

✡✡✡

स्वर्णिम युग

(पिछले अंक में, परमपिता परमात्मा शिव द्वारा उद्‌घाटित तथ्यों के आधार पर हमने जाना कि स्वर्णिम युग में राजतन्त्र, प्रशासन आदि प्रणालियाँ कैसी होती हैं। अब आगे पढ़िए ...)

राजनीति

सतयुग में जो राज्य स्थापित होता है वह सौलह कला सम्पूर्ण व्यक्तियों द्वारा चलाया जाता है जिनके दिल में सारी प्रजा के लिए बेहद प्यार होता है और ये वहाँ के विश्व महाराजन और विश्व महारानी कहलाते हैं। यह शाही साम्राज्य 8 पीढ़ियों तक चलता है। वहाँ हर देवात्मा को उसकी योग्यता के अनुरूप पद और सम्मान मिलता है इसलिए सभी परिपूर्णता और शान्ति का अनुभव करते हैं। वहाँ सब समान होते हैं। सिर्फ गुणों के अनुसार उनका पद और सम्मान होता है। वहाँ कोई औपचारिक सीमा रेखाएँ या आने-जाने पर रोक-टोक नहीं होती क्योंकि सारा साम्राज्य ही एक सम्राट-सम्राज्ञी के अधीन होता है। सारे मिल कर इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि राज्य सरलता से और समानता से चले। राजा का राजदरबार, एक तरह से एक जरिया होता है जिससे कि मुख्य लोग आपस में मिल सकें। वहाँ वे शिकायतों या कठिनाइयों पर चर्चा नहीं करते बल्कि उनके राज्य विभाग की विशेषताओं का आपसी तौर पर कैसे लाभ उठाया जाय, यही चर्चा का विषय होता है।

व्यवस्थापन

सतयुग में धन, राज्य-सत्ता और धर्म ये तीनों ही प्रमुख शक्तियाँ हैं। तीनों के सर्वेसर्वा महारानी और महाराजा होते हैं। सुख के लिए मर्यादाओं का पालन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। मर्यादाओं का पालन ही सतयुग के सुख का आधार है और उनका उल्लंघन दु:ख का कारण है जैसा कि कलियुग में हो रहा है। सतयुग को स्वर्ग भी कहा जाता है जो कि 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म वाले देवी-देवताओं की दुनिया है। स्वर्ग माना अटल, अखण्ड, अचल और अविनाशी राज्य। स्वर्णिम युग का आरम्भ सन् 1-1-0001 से होगा। यह वह समय है जबकि प्रथम विश्व महाराजन श्री नारायण और विश्व महारानी श्री लक्ष्मी जी राजगद्दी पर विराजमान होकर इस समस्त विश्व की बागडोर सम्भालने के निमित्त बनेंगे।

दरबार

स्वर्ग के राजदरबार की महिमा ही कुछ निराली है। राजदरबार का प्रवेशद्वार नौ रत्नों से सजाया होता है जिसमें से आने वाली नवरंगी रोशनी ही देवताओं का स्वागत करती है। कहा जाता है कि देवताओं के पैर जमीन पर नहीं पड़ते। दरबार के फर्श पर, चारों ओर रंगबिरंगे फूलों की कलाकृति से सजा गलीचा (कालीन) होता है जिस पर अपने नाजुक कमल चरणों को रखते हुए महारानी तथा महाराजा, रानी तथा राजा, राजपरिवार के अन्य सदस्य प्रवेश करते हैं और हीरे-रत्नों से जड़ित सिंहासन, आसन आदि को सुशोभित करते हैं। दरबार में एक तरफ महारानी-महाराजा के लिए ऊँचा स्थान होता है तो दूसरी ओर अनेकानेक राज्यों के रानी-राजा एवं उनके परिवार के लिए स्थान होता है। सभी दरबार में पधारे राज-मेहमानों के लिए अनेकानेक दास-दासियाँ सेवा में तत्पर रहते हैं। महलों के चारों ओर रंगबिरंगे सुन्दर पारदर्शक रेशमी पर्दों से सुशोभित खिड़कियाँ होती हैं जिनमें लगे हीरे-रत्नों द्वारा दरबार में रोशनी आती है। छत में, रंगबिरंगे हीरों से बने झूमर लगे होते हैं जिनमें से आती हुई इन्द्रधनुषी सप्तरंगी किरणें दरबार की शोभा में चार चाँद लगाती हैं। ऐसे जगमगाते हुए स्वर्णिम दरबार में शोभान्वित चैतन्य मूर्तियाँ (देवी-

देवताएँ) कभी रास द्वारा कभी गायन-वादन द्वारा एवं कभी राज-चर्चा द्वारा दरबार को सजाते हैं।

समाज

स्वर्णिम युग में एक आदर्श समाज व्यवस्था होती है। इसमें अधिभौतिक, भौतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, नैतिक, सामाजिक तथा शारीरिक सम्बन्धों की व्यवस्था सतोप्रधान रूप में होती है। मनुष्यों का आपसी व्यवहार सम्पूर्णतः नैतिक मूल्यों के आधार पर ही चलता है और समाज दैवी गुण सम्पन्न और सुखी होता है। अच्छे-से-अच्छे सुखदाई सम्पन्न परिवार होते हैं। अनेक मर्तबे होते हुए भी परस्पर परिवार की भावना रहती है। वहाँ रॉयल परिवार का पद और सम्मान भी इतना ही ऊँचा होता है जितना कि तख्तनशीन महारानी-महाराजा का। दास-दासियाँ होंगी पर यह नहीं कहेंगे कि ये दास-दासी हैं। नम्बर होंगे, सेवा होगी लेकिन दासी हैं, इस भावना से नहीं चलेंगे। वहाँ परिवार के सब सम्बन्धी खुश-मिजाज, सुखी, समर्थ होंगे। जो भी श्रेष्ठता हैं, वे सब वहाँ हैं। सर्व प्रकार के साधनों और सुविधा के होते हुए भी उनसे प्राप्त सुख से सभी सदा सन्तुष्ट रहते हैं।

संस्कृति

आनन्द, सम्पत्ति में अवलंबित होता है और स्वर्ग में बहुत मात्रा में सम्पत्ति, विमान, बड़े-बड़े महल और हर प्रकार का वैभव होता है। पूर्णतः निरोगी शरीर होता है। देवी-देवताएँ सब प्रकार का सतोप्रधान आनन्द उठाते हैं इसलिए उसे सुख की दुनिया कहा जाता है। भारत की संस्कृति अन्य संस्कृतियों से बहुत प्राचीन है। इस युग में मानव के जीने के तरीके, खाने के तरीके तथा उत्सव बहुत ही अनुशासन में मनाए जाते हैं। भारतीय संस्कृति की शुरूआत देवी-देवताओं की बहुत ऊँची सामाजिक जीवन प्रणाली से होती है। उनका आहार, उनके बोल आदि सब आलिशान (बादशाही) होते हैं। उनका सुख भी अत्यंत उच्च होता है। श्री लक्ष्मी-श्री नारायण हमेशा हँसमुख और प्रेरणादायी होते हैं। जीवनमुक्ति की अवस्था में सभी रहते हैं अर्थात् जीवन में रहते भी सभी पूर्ण मुक्त अवस्था का अनुभव करते हैं। कोई बन्धन नहीं। देवी-देवताओं के बीच पावन प्यार होता है। वहाँ प्यार होता है पर पाप नहीं होता।

भाषा

सतयुग की भाषा शुद्ध हिन्दी होती है। हर शब्द वस्तु को सिद्ध करता है। एक शब्द का एक ही अर्थ होता है और स्पष्ट होता है जिससे भाव बदल न जाए। भाषा संस्कृत नहीं परन्तु संस्कार युक्त होती है अर्थात् बोलने में मधुरता, नम्रता का रस लिए हुए होती है। एक-दो को सम्मान देने वाले शब्दों सहित 'आप-आप' कर पुकारने वाली होती है। साथ-साथ नैनों की भाषा भी होती है जिससे इशारों में समझा जा सके। कहावत भी है कि देवताओं को इशारा ही काफी है या इशारों को समझने वालों को ही देवता कहा जाता है।

– क्रमशः

मलकापुर (महाराष्ट्र)- सांसद भ्राता आनंदराव जी अडसुल एवं विधायक भ्राता चैनसुख संचेती को परमात्म-परिचय देती हुई ब्र.कु. गीता बहन ।

अष्ट सिद्धियाँ बनाम अष्ट शक्तियाँ

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

अष्ट-सिद्धियाँ, अष्ट-शक्तियों का ही दूसरा रूप हैं। 'सिद्धि' और 'शक्ति' पर्यायवाची शब्द हैं। भक्ति मार्ग के शास्त्रों में वर्णित प्रथम सिद्धि **अणिमा** नाम से जानी जाती है जिसका अर्थ है अति सूक्ष्म परिमाण या वह शक्ति जिसके द्वारा एक योगी अति सूक्ष्म रूप धारण कर लेता है। इसका यह चमत्कारिक अर्थ नहीं है कि योगी का भौतिक शरीर अति सूक्ष्म रूप धारण कर लेगा। इसका अर्थ है स्थूलता के बजाए सूक्ष्म आकारी आकृति में अपने शरीर का अनुभव करना। परमात्मा शिव से प्राप्त ज्ञान की धारणा से हमें संकीर्ण व विस्तार करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है, हम शरीर के बजाए स्वयं को अणु रूप आत्मा समझने लगते हैं जोकि अणिमा का वास्तविक अर्थ है।

लघिमा दूसरी सिद्धि बतलाई जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ है शरीर का छोटा हो जाना। इसका एक उदाहरण भक्तिमार्ग के शास्त्र रामायण में हनुमान का लंका में प्रवेश करते समय बिल्ली जितना छोटा शरीर धारण करना बतलाया जाता है ताकि सुरक्षा प्रहरियों की नजर से बचा जा सके। वास्तव में राजयोग में हम सीखते हैं कि यह स्थूल रूप से आकार परिवर्तन की बात न होकर सूक्ष्म रूप से स्वयं को समेटने की शक्ति का ही नाम है। ऐसी स्थिति तब प्राप्त की जा सकती है जब मनुष्य 5 विकारों से, सामाजिक संबंधों व बन्धनों की अधिकता या मकड़जाल से, अनावश्यक कामनाओं से और व्यर्थ के संकल्पों से मुक्त हो। ऐसी स्थिति को प्राप्त मनुष्य का लौकिक समाज में अन्य मनुष्यों से लेन-देन या हिसाब-किताब या कर्मों का लेखा-जोखा सिमटता जाता है। वह समाज में रहते हुए भी साक्षी भाव से अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करता रहता है। एक प्रकार से वह अन्य मनुष्यों के लिए लघु (लघिमा) होता जाता है।

परमात्मा शिव से प्राप्त ज्ञान हमें 'समेटने की शक्ति' प्रदान करता है जो कि वास्तव में 'लघिमा' के समकक्ष है।

अष्ट सिद्धि के रूप में '**प्राप्ति**' का अर्थ बड़ा व्यापक है। एक तरफ तो अष्ट सिद्धि प्राप्त करने की बात की जाती है और दूसरी तरफ 'प्राप्ति' को इनमें से एक सिद्धि बता दिया जाता है। इसका भाव यह है कि सामान्य से हट कर कुछ असामान्य या विशिष्ट प्राप्त करना है। आज साधारण मनुष्य नश्वर धन की प्राप्ति के लिए ही प्रेरित रहता है और अविनाशी ज्ञान, गुण एवं श्रेष्ठ संस्कारों के पीछे छिपी अखुट प्राप्ति को देख नहीं पा रहा है। प्राप्ति का एक अर्थ भाग्य प्राप्त होने से भी है जो श्रेष्ठ कर्मों से ही बनता है। श्रीमत के आधार से प्राप्त 'परखने की शक्ति' सत्य का स्पष्ट बोध कराती है। परमात्मा शिव ने ब्रह्मा के मुख से जो महावाक्य उच्चारे हैं वही 'श्रीमत' हैं परन्तु कुछ भाग्यशाली मनुष्य ही ब्रह्मा और उनमें अवतरित शिव को पहचान पाते हैं।

'परखने की शक्ति' आत्मिक शक्ति है और 'प्राप्ति' उस शक्ति के उपयोग का फल है। जिस प्रकार एक वृक्ष धरती में मौजूद असंख्य तत्वों में से आवश्यक तत्वों को ग्रहण कर फल का निर्माण करता है, उसी प्रकार, एक बुद्धिमान मनुष्य विभिन्न विकल्पों का त्याग कर, उपयोगी संकल्पों को परख कर फिर लक्ष्य रूपी फल की प्राप्ति कर लेता है। इस प्रकार, 'प्राप्ति' फल भी है और सिद्धि भी।

चौथी अष्ट सिद्धि '**प्राकाम्यम**' बतलाई जाती है जिसका अर्थ है इच्छित वस्तु का तुरन्त प्राप्त होना। इच्छा मात्र से कोई भी वस्तु यदि तुरन्त प्राप्त हो जाए तो मनुष्य शारीरिक श्रम या कर्म करना ही छोड़ दे। अच्छे कर्म से ही फल अच्छा प्राप्त होता है। परन्तु फिर भी अच्छे कर्म करने में सभी समर्थ नहीं हो पाते क्योंकि श्रेष्ठ कर्म में विघ्न-बाधायें काफी आती हैं और उनका सामना करने का पुरुषार्थ कुछ ही मनुष्य दिखा पाते हैं। इस प्रकार, 'प्राकाम्यम' रूपी सिद्धि 'सामना करने की शक्ति' की प्रारब्ध है अर्थात् सामना करने की शक्ति स्रोत है और 'प्राकाम्यम' उसकी रचना है। मान लीजिए, कोई व्यक्ति, परमात्मा शिव द्वारा दिए जा रहे 'ज्ञान' को प्रतिदिन सुनता है और मनन-चिन्तन कर धारण करता है। उसके परिवार में अचानक किसी की मृत्यु हो जाती है। ऐसे में उसकी मानसिक अवस्था 'अचल-अडोल' स्थिति को तुरन्त प्राप्त (प्राकाम्यम) कर पूरे परिवार को इस दु:ख का सामना करने की शक्ति देती है। या वह खुद मृत्यु के कगार पर हो और निडरता से परमात्मा की स्मृति में रहते हुए मृत्यु का सामना करता है। तो यह अद्भुत सामना करने की शक्ति उसने तत्काल प्राप्त नहीं कर ली बल्कि ईश्वरीय सत्य ज्ञान को लम्बे समय तक जीवन में अपना कर उसने इसका सही समय पर उपयोग किया।

पाँचवीं सिद्धि '**महिमा**' बतलाई गई है जिसका अर्थ, गुणों या महत्त्व के गुणगान से है। अच्छे कर्मों से यश या महिमा समाज में स्वत: होती है। इसके लिए जीवन आदर्शों पर आधारित हो और जन-कल्याण की भावना से परिपूर्ण हो। महिमा की सिद्धि के लिए अलग से कोई विशेष विधि या कर्मकाण्ड नहीं है बल्कि नीतिगत व अच्छे जनकल्याणकारी जीवन का होना ही महिमा योग्य बना देता है। अत: विषम परिस्थितियों से भरे इस समाज में, सभी की शुभ भावनाओं का पात्र बनना आवश्यक है। यह तब सम्भव है जब शुभचिन्तकों के अलावा आलोचकों व विरोधियों को भी अपना मित्र व हितैषी बना लिया जाए। इसके लिए उनकी अलोचनाओं व प्रारम्भिक तिरस्कार या विरोध को 'समा लेने की शक्ति' होनी चाहिए। महात्मा गाँधी, मदर टेरेसा, गुरु नानक, जीसस क्राईस्ट आदि महापुरुषों के व्यक्तित्व के निर्माण में 'समाने की शक्ति' का महत्त्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने इस शक्ति से अपने विरोधियों का दिल जीता और महिमा योग्य बने। परन्तु इस शक्ति से सम्पन्न बनने के लिए विशाल हृदय, अचल-अडोल स्थिति, समद्रष्टा तथा प्रेम-दया का दरिया बनना जरूरी है, जो राजयोग की साधना से ही सम्भव है।

ईशित्वम यानि ऐश्वर्य (बड़प्पन) को छठी सिद्धि के रूप में जाना जाता है। परन्तु किसी भी योगी या पुरुषार्थी के लिए ऐश्वर्य या बड़प्पन की इच्छा रखना, खुद की आध्यात्मिक प्रगति को रोकना है। यह एक ऐसा सोने का पिंजरा है, जिसमें अच्छे-अच्छे महारथी भी, अनजाने में खुद को उसी प्रकार बंद कर लेते हैं जैसे कि एक चूहा, रोटी के लालच में चूहेदानी में बंद हो जाता है। चूहे को अपनी गलती का अहसास तुरन्त हो जाता है परन्तु मनुष्यों को काफी देर से होता है। वास्तव में ईशित्वम का अर्थ है ईश्वर के नजदीक आना, आत्मा का ऐश्वर्यशाली बनना और शरीर से श्रेष्ठ गौरवशाली कर्म करना अर्थात् ईशिता (सब पर सु-प्रभाव डालने की शक्ति) प्राप्त करना। दूसरों पर अच्छा प्रभाव तब डाला जा सकता है जब बेहद की अचल-अडोल स्वस्थिति हो एवं जीवन जन-कल्याण के कार्यों में लगा हो। इसके लिए सहनशक्ति रूपी सुरक्षा-वस्त्र धारण करना आवश्यक है। सहनशक्ति के लिए क्षमावृत्ति और धैर्य के गुण का होना आवश्यक है जिनसे उत्पन्न शुभभावना और शुभकामना शत्रु का

भी हृदय परिवर्तन कर देती है। ईशित्वम रूपी सिद्धि की प्राप्ति का स्त्रोत 'सहनशक्ति' ही है।

'वशित्वम' को सातवीं अष्ट-सिद्धि बतलाया गया है जिसका अर्थ है सबको अपने वश में करना। यह तब सम्भव है जब नम्र, नि:स्वार्थ, भातृत्व और सम-भाव से सबसे पेश आया जाए और सबके 'मन' के द्वारा खुद को स्वीकार कराया जाए। इसके लिए सर्व का सहयोगी होना और सर्व का सहयोग स्वत: प्राप्त कर लेना आवश्यक है। यह 'सहयोग की शक्ति' के द्वारा ही सम्भव है। 'वशित्वम' शब्द से जादू-टोने द्वारा सम्मोहित कर दिए जाने के जैसा आभास मिलता है जो कि तामसिक क्रियाएँ हैं। आम व्यक्ति अक्सर अपनी लौकिक समस्याओं के समाधान हेतु तांत्रिक से सम्पर्क कर 'वशीकरण मन्त्र' जैसी सिद्धि हासिल करना चाहता है परन्तु ऐसी सिद्धियों से किसी का स्थायी कल्याण हुआ हो ऐसा देखने में नहीं आता। 'वशित्वम' की बजाय यदि इसके विपरीत 'शिवत्वम' यानि कल्याणकारी शिव परमात्मा से अष्ट शक्तियों का वरदान प्राप्त किया जाए तो इससे ऊँची सतोगुणी प्राप्ति मनुष्य के जीवन में और कोई हो नहीं सकती। शिव परमात्मा के यथार्थ स्वरूप व उसकी अलौकिक क्रियाओं को जब मन, बुद्धि और विवेक से परख कर निश्चयपूर्वक जान लिया जाता है तो अलौकिक प्राप्तियाँ जिनमें अष्टशक्तियाँ भी हैं, लौकिक जीवन को पलट कर रख देती हैं।

'कामावसायिता' आठवीं सिद्धि बतलाई जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सत्य संकल्प'। सत्य संकल्प का आधार है, 'सत्य ज्ञान' और इसकी जीवन में 'धारणा'। चेतन अवस्था में रहते मन निरन्तर संकल्प करता है और निरन्तर सही या गलत, हाँ या ना, सत्य या असत्य का निर्णय करता रहता है। अर्थात् सत्य संकल्प का आधार निर्णय शक्ति है। निर्णय शक्ति का आधार ज्ञान व निश्चय है। अगर स्मृति में सत्य ज्ञान है तो निर्णय भी सत्य-आधारित होंगे और फिर मन में भी सत्य संकल्प चलेंगे। इससे यह इशारा मिलता है कि कामावसायिता रूपी सिद्धि तब प्राप्त हो सकती है जब मनुष्यों के धार्मिक या आध्यात्मिक कर्मों का आधार सत्य ज्ञान हो, ना कि चली आ रही मान्यतायें, परम्परायें या भटक गए रीतिरिवाज हों।

इस प्रकार 'कामावसायिता' एक सिद्धि भी है और आदि शक्ति भी है। इससे कलियुग के अन्त में, पुरुषोत्तम संगम युग पर अष्ट सिद्धि का शोधन हो, अष्ट-शक्तियों का प्रादुर्भाव, पुरुषार्थी मनुष्यात्माओं में संस्कार के स्तर पर होता है। देवी-देवताएँ, अष्ट-शक्तियाँ सतयुग में प्रारब्ध के रूप में प्राप्त करते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि अष्ट सिद्धियाँ वास्तव में अष्ट-शक्तियाँ ही हैं, बस इनके नाम व भाव में गूढ़ता व जटिलता बना दी गई है। आत्मा का वास्तविक स्वरूप इन शक्तियों की सम्पन्नता का है। सतयुग में इन शक्तियों से सम्पन्न देवता इन शक्तियों से अनजाने रहते हैं। वहाँ ये शक्तियाँ संस्कारवश सहज भाव से कार्यरत रहती हैं। देवताजन इन शक्तियों को पुरुषोत्तम संगमयुग में आध्यात्मिक पुरुषार्थ से संस्कारों में समाविष्ट करते हैं। वहाँ गुण, शक्तियों की सम्पन्नता उसी प्रकार सामान्य बात होती है जिस प्रकार अभी कलियुग में सभी आत्माओं का निर्बल व विकारी होना एक सामान्य बात मानी जाती है। जैसे-जैसे लक्ष्य करीब आता जाता है वैसे-वैसे लक्षण के रूप में दिव्य अष्ट-शक्तियाँ प्रकट होने लगती हैं। आत्मिक अष्टशक्तियां हर किसी लक्ष्य-उन्मुख आध्यात्मिक पुरुषार्थी के लिए एक ईश्वरीय वरदान हैं। **क्योंकि 'ज्ञान के अभाव में लक्ष्य का महत्त्व नहीं', 'लक्ष्य के अभाव में पुरुषार्थ का महत्त्व नहीं' और 'परिस्थितियों के अभाव में अष्ट शक्तियों का महत्त्व नहीं।'**

❑❑

1. राजपुरा- सन्त दीनदयाल पाण्डे जी को शॉल ओढ़ा कर सम्मानित करती हुई ब्र.कु. कमला बहन। **2. मनाली-** नए भवन के शिलान्यास कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण करते हुए महिला मण्डल के उपाध्यक्ष, बहन कमला शर्मा, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, नगर पंचायत प्रधान भ्राता प्रवीन जी, ब्र.कु. राज बहन तथा अन्य। **3. देवबन्ध-** श्री त्रिपुर माँ बाला सुन्दरी देवी मेले की कार्यवाहक अध्यक्षा, ब्र.कु. संगीता बहन को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए। **4. पानीपत (मॉडल टाउन)-** पुलिस अधीक्षक बहन सुमन मंजरी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरला बहन। **5. लखनऊ (इन्दिरा नगर)-** आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए न्यायमूर्ति डॉ. भ्राता सूर्या जी तथा ब्र.कु. स्मिता बहन। **6. देहली-** समाज सेवा प्रभाग के कार्यक्रम के पश्चात् तिहाड़ जेल के अधीक्षक भ्राता सतनाम सिंह, ब्र.कु. भ्राता प्रेम सिंह को मोमेन्टो भेंट करते हुए। **7. सीतापुर-** उद्योगपति भ्राता प्रताप नारायण गुप्त को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. योगेश्वरी बहन। **8. सफीदों-** रोटरी क्लब अध्यक्ष भ्राता आर.एन. सिंगला जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. स्नेह बहन तथा ब्र.कु. भारतभूषण भाई। **9. बडपुर-** भाजपा जिला अध्यक्ष भ्राता सत्यपाल जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मंगला बहन। **10. नादौन-** भड़ोली महिला मण्डल में साप्ताहिक ज्ञान का कोर्स कराने के बाद ब्र.कु. वीरबाला बहन तथा ब्र.कु. पूजा बहन समूह चित्र में। **11. हाथरस (आनन्दपुरी)-** पुलिस क्षेत्राधिकारी भ्राता अनिल कुमार सिंह को आध्यात्मिक चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र.कु. शान्ता बहन।

1. **सूरतगढ़-** 'सुपर थर्मल पॉवर' में तनावमुक्त जीवन विषयक प्रवचन करते हुए ब्र.कु. पीयूष भाई। ध्यानपूर्वक सुनते हुए मुख्य अभियन्ता भ्राता कैलाश जोशी, अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता भ्राता एस.के. मेहता तथा अन्य। 2. **भादरा-** 'नारी शक्ति' विषय पर महिलाओं को सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. विजय बहन। 3. **भीलवाड़ा-** तेरह पंथी जैन मुनि महाप्रज्ञ जी को धार्मिक प्रभाग की स्मारिका भेंट करती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन। 4. **आगरा (सिकन्दरा)-** केन्द्रीय कारागार में ईश्वरीय सन्देश सुनने के बाद व्यसनों का दान करते कैदी भाई। 5. **बाँदा-** तपस्या भवन का उद्घाटन करती हुई राजयोगिनी ब्र.कु. गंगे दीदी जी। साथ में हैं आयुक्त भ्राता सोबरन सिंह यादव, ब्र.कु. रमा बहन तथा इंजीनियर ओमप्रकाश भाई। 6. **गुड़गाँव-** 'श्रेष्ठ समाज पुनर्निर्माण अभियान' के अन्तर्गत विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. अमीरचन्द भाई। मंच पर महिला कांग्रेस क्षेत्रीय व्यवस्थापिका बहन आशा शर्मा तथा अन्य। 7. **पीलीभीत-** ग्राम बनौसा में ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. कमलेश बहन तथा ब्र.कु. राज बहन। 8. **विधूना (इटावा)-** चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता आदर्श मिश्रा जी, ब्र.कु. लता बहन, रजनी बहन तथा अन्य।

1. करनाल (सेक्टर 7)- आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं हिन्दुस्तान पेट्रोल पम्पस् के मालिक भ्राता राजीव मल्होत्रा, आर्टिस्ट भ्राता पी.एन. मल्होत्रा, ब्र.कु. प्रेम बहन, ब्र.कु. मेहरचन्द भाई तथा अन्य। **2. होशियारपुर**- स्वामी वुआदित्ता महाराज को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन। **3. देहरा गोपीपुर**- मानव कल्याण आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. भ्राता बलदेव सिंह अत्तरी, एडवोकेट भ्राता कपिल देव सूद, ब्र.कु. राज बहन तथा ब्र.कु. आदर्श बहन। **4. चरखी दादरी**- सन्त सम्मेलन में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. वसुधा बहन। **5. महम**- जादूगर सम्राट भ्राता सूरज के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. चेतना बहन तथा ब्र.कु. सुमन बहन समूह चित्र में। **6. सुन्दर नगर**- वन प्रशिक्षण केन्द्र में 'तनाव प्रबन्धन' कोर्स के बाद ब्र.कु. शिखा बहन तथा अन्य ग्रुप फोटो में। **7. फिरोजपुर सिटी**- दिव्य दर्शन हॉस्पिटल उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. तृप्ता बहन, डॉ. भ्राता इकबाल सिंह तथा अन्य। **8. कुल्लु**- पार्वती जल विद्युत परियोजना के सभागार में आध्यात्मिक प्रवचन देते हुए ब्र.कु. सुरेश गुप्ता।

1. आबू पर्वत- विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए उपखण्ड अधिकारी भ्राता देवाशीष पृष्टि जी। **2. अजमेर-** नवनिर्वाचित सांसद भ्राता रासा सिंह रावत को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रिया बहन तथा ब्र.कु. राधा बहन। **3. लखनऊ (गोमती नगर)-** 'अलविदा तनाव' शिविर का उद्घाटन करते हुए न्यायमूर्ति भ्राता खेमकरन जी, न्यायमूर्ति भ्राता भँवर सिंह जी, समाज कल्याण आयुक्त भ्राता आर. रमणी जी, प्रमुख सचिव स्वास्थ्य भ्राता आर.के. मित्तल जी तथा अन्य। **4. आबू रोड (संगम भवन)-** रीको में ब्रह्माकुमारी पाठशाला का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. दादी धैर्यमणि जी, रीको के अधिकारी भ्राता सुन्दरलाल आहूजा, ब्र.कु. करुणा भाई, ब्र.कु. भरत भाई तथा अन्य। **5. चण्डीगढ़ (सेक्टर 21)-** मेयर बहन कमलेश को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कुसुम बहन तथा ब्र.कु. मुकेश बहन। **6. देहली (पश्चिम विहार)-** श्रेष्ठ समाज का पुनर्निर्माण अभियान के अन्तर्गत मंच पर विराजमान हैं सनातन धर्म मन्दिर के प्रधान भ्राता नागपाल जी, पार्षद भ्राता सुरजनलाल पंवार, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य। **7. पानीपत-** 'आध्यात्मिक एकता द्वारा परमात्म प्रत्यक्षता' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा के पूर्व मन्त्री भ्राता बलबीर पाल शह्रा, डॉ. भ्राता सेतिया जी, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. भारतभूषण भाई तथा अन्य।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail: gyanamrit@vsnl.com Ph.No.: (02974) 228125, 228126 bkatamad1@sancharnet.in

1. काठमाण्डु- वन तथा भूमि संरक्षण मन्त्रालय के सचिव भ्राता चाँदी प्रसाद श्रेष्ठ प्रर्यावरण जागृति कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए। साथ में हैं इन्जीनियर कौंसिल के अध्यक्ष भ्राता के.बी. शाह, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. किरण बहन, ब्र.कु. कुसुम बहन तथा अन्य। **2. सूरत**- सम्पूर्ण स्वास्थ्य मेले में व्यसन मुक्ति तथा अनुभूति कुटीर का उद्घाटन करते हुए गुजरात के स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता आई.के. जाडेजा। साथ में हैं उद्योग मन्त्री भ्राता अनिल पटेल, ब्र.कु. लता बहन तथा अन्य। **3. पारस (नागपुर)**- महाराष्ट्र के ऊर्जा राज्यमन्त्री भ्राता माणिक राव ठाकरे को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शकुन्तला बहन। **4. मुजफ्फरपुर**- पूर्व केन्द्रीय मन्त्री भ्राता एल.पी. साही तथा अन्य को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. रानी बहन। **5. अबोहर (पंजाब)**- सांसद भ्राता जोरासिंह मान को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. बहनें। **6. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)**- राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता मदनलाल खुराना, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता प्रेम कुमार शारदा, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मृत्युन्जय भाई तथा अन्य, विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए। **7. देहरादून**- नए भवन के शिलान्यास समारोह का उद्घाटन करते हुए उत्तरांचल के परिवहन मन्त्री भ्राता हीरासिंह बिष्ट जी, विधायक भ्राता जोतसिंह घनसाली, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. अचल बहन, ब्र.कु. प्रेम बहन तथा ब्र.कु. भरत भाई। **8. आदिसअबाबा इथोपिया**- इलेक्ट्रिकल तथा कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग विभाग के विद्यार्थियों के समक्ष 'माइन्ड मेनेजमेन्ट' विषय पर प्रवचन के बाद ब्र.कु. दीप्ति बहन उनके साथ।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan – 307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

रायपुर- छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता ए.पी. सोमसुन्दरम वेंकटाचल मूर्ति के राजभवन में शपथ ग्रहण करने के पश्चात् उन्हें बधाई देती हुई ब्र.कु. कमला बहन। साथ में हैं महामहिम राज्यपाल भ्राता के.एम. सेठ जी।

आबू रोड (शान्तिवन)- राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता मदनलाल खुराना जी को ईश्वरीय सन्देश देती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी।

गुड़गाँव (सरस्वती विहार)- भारत के विदेश राज्यमन्त्री भ्राता राव इन्द्रजीत जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कुसुम बहन तथा ब्र.कु. सकलदेव सिंह भाई।

गुरायां (पंजाब)- भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री भ्राता इन्दर कुमार गुजराल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन।